तापमान
अधिकतम 34.7°C
न्यूनतम 20.5°C

हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार 11 अक्टूबर 2026

9 पौधरोपण व पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश



10 पीआर धान की खरीद न होने पर किसानों ने दिया धरना



खबर संक्षेप

फैक्ट्री से सामान चोरी करने का आरोपी पकड़ा

सोनीपत। राई थाना पुलिस ने गांव सेवली में निर्माणाधीन फैक्ट्री से लोहे के नट-बोल्ट, रॉड और एंगल चोरी करने के मामले में दूसरे आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित की पहचान उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले के न्यू बस्ती मुस्तफाबाद निवासी आरिफ के रूप में हुई है। पुलिस ने उससे चोरीशुदा सामान बरामद किया है। उसे न्यायालय में पेश किया गया, जहां से न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। दिल्ली के वेस्ट प्रीतमपुरा निवासी राजेश ने 8 अक्टूबर 2026 को पुलिस को शिकायत दी थी कि गांव सेवली में फैक्ट्री का शेड बनवाया जा रहा है। वहां निर्माण कार्य के लिए लोहे का सामान रखा था। सुबह करीब चार बजे चौकीदार प्रेम पाल ने सूचना दी कि चार-पांच चोर नट-बोल्ट के कट्टे, रॉड और एंगल मोटरसाइकिल व कार में लादकर ले गए हैं। मौके पर एक आरोपित परविंदर निवासी गढ़ मिरकपुर को पकड़ लिया गया था। अन्य आरोपित करीब 1500 किलोग्राम सामान ले गए थे। सहायक उप निरीक्षक सतपाल की टीम ने अब आरिफ को गिरफ्तार किया है।

अवैध पिस्तौल सहित युवक गिरफ्तार

सोनीपत। पुलिस की एसयूएजी यूनिटने सेक्टर-7 टीम ने अवैध हथियार रखने के मामले में फरीदाबाद जिले के गांव तगा फतेहपुर निवासी निशांत उर्फ काला को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से एक देशी पिस्तौल बरामद हुआ। पुलिस ने आरोपित को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार, 9 अक्टूबर को मुख्य सिपाही प्रदीप अपनी टीम के साथ खरखौदा बाईपास पर गश्त कर रहे थे। इसी दौरान सूचना मिली कि निशांत उर्फ काला दिल्ली बाईपास पर खरखौदा फ्लाईओवर के नीचे खड़ा है और उसके पास अवैध पिस्तौल है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और संदिग्ध युवक को काबू कर लिया। तलाशी लेने पर उसकी जींस की जेब से पिस्तौल बरामद हुआ।

सीजेपी के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन को लेकर सख्ती : पुलिस ने नाके लगाकर जांचे वाहन

कुंडली-सिंघु बॉर्डर पर लगा 5 किमी. लंबा जाम

■ पुलिस ने दिल्ली जा रहे किसान नेताओं और कांग्रेस कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया, बाद में छोड़ा

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रदर्शन के आह्वान का असर शनिवार को सोनीपत में भी दिखाई दिया। प्रदर्शन के मद्देनजर पुलिस ने कुंडली-सिंघु बॉर्डर सहित दिल्ली की ओर जाने वाले प्रमुख मार्गों पर सुरक्षा कड़ी कर दी। वाहनों की सघन जांच के चलते कुंडली-सिंघु बॉर्डर पर करीब पांच किलोमीटर लंबा जाम लग गया। कारों, बसों और अन्य वाहनों की लंबी कतारें लगने से यात्रियों को परेशानी झेलनी पड़ी। वहीं, प्रदर्शन में शामिल होने के लिए दिल्ली जाने का प्रयास कर रहे किसान नेताओं और कांग्रेस कार्यकर्ताओं को पुलिस ने अलग-अलग स्थानों से हिरासत में लिया। इनमें कई नेताओं और कार्यकर्ताओं को पूछताछ के बाद छोड़ दिया गया। सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए रेलवे स्टेशन, राष्ट्रीय राजमार्ग-44, कुंडली-सिंघु बॉर्डर और मुरथल व भिगान टोल प्लाजा पर पुलिस बल तैनात रहा। प्रदर्शन को देखते हुए कुंडली-सिंघु बॉर्डर पर दिल्ली की ओर जाने वाले वाहनों की जांच की गई। पुलिसकर्मी वाहनों को रोककर उनकी तलाशी लेने के साथ संदिग्ध नजर आने वाले लोगों से पूछताछ कर रहे थे। जांच प्रक्रिया के कारण वाहनों की रफ्तार धीमी पड़ गई और देखते ही देखते कतारें लंबी होती चली गईं। करीब पांच किलोमीटर तक वाहन जाम में फंसे रहे। दिनभर रुक-रुककर यातायात चलता रहा।

■ सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए जगह जगह जवान तैनात रहे



सोनीपत। पुलिस की चेकिंग के चलते राष्ट्रीय राजमार्ग-44 पर लगा लंबा जाम।

वीरेंद्र पहल और राजेश को भी हिरासत में लिया

प्रदर्शन में शामिल होने के लिए दिल्ली जा रहे किसान नेता वीरेंद्र पहल और कांग्रेस नेता राजेश पहलवान को पुलिस ने हिरासत में लिया। वीरेंद्र पहल को राई से हिरासत में लेकर राई थाने भेजा गया, जबकि राजेश पहलवान को गन्नौर जीटी रोड से हिरासत में लेकर बड़ी थाने पहुंचाया गया। दोनों को उनके अन्य साथियों के साथ रखा गया और बाद में छोड़ दिया गया। युवा कांग्रेस के जिला सचिव विक्की पहलवान, ओम पहलवान और सतपाल को भी पुलिस ने हिरासत में लिया, जिन्हें बाद में रिहा कर दिया गया। जिला पार्षद संजय बड़वासनियां को उनके घर पर ही नजरबंद रखा गया। हालांकि आम आदमी पार्टी के नेता विमल किशोर पुलिस की निगरानी के बावजूद दिल्ली पहुंच गए। भिगान टोल पर नाकाबंदी कर वाहनों की जांच राष्ट्रीय राजमार्ग पर भिगान टोल प्लाजा के पास भी पुलिस ने नाकाबंदी की। यहां से गुजरने वाले वाहनों की जांच की गई और संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखी गई। प्रदर्शन को लेकर पुलिस की सतर्कता के चलते टोल क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रही। पुलिस अधिकारियों ने प्रमुख मार्गों पर तैनात जवानों के माध्यम से निगरानी बनाए रखी।

दिल्ली-अंबाला रूट पर 14 एक्सप्रेस व सवारी गाड़ियों का परिचालन रहा रद्द



सोनीपत। रेलवे स्टेशन पर तैनात पुलिस कर्मचारी।

सोनीपत। दिल्ली में प्रस्तावित कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के विरोध प्रदर्शन के चलते शनिवार को दिल्ली-अंबाला अप-डाउन रूट पर 14 एक्सप्रेस ट्रेनें व सवारी गाड़ियों का परिचालन रद्द रहा। वहीं 11 एक्सप्रेस ट्रेनें व सवारी गाड़ियां अपने निर्धारित समय से 11:35 घंटे तक की देरी से चलीं। रेल यातायात प्रभावित होने से अधिकतर यात्रियों को अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए बसों या निजी वाहनों का सहारा लेना पड़ा। लंबी दूरी की यात्रा करने वाले कुछ यात्री सोनीपत रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों का इंतजार करते नजर आए। वहीं अधिकतर यात्री पूछताछ केंद्र पर ट्रेनों की स्थिति का पता करते रहे।उधर दिल्ली में प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन का असर शुक्रवार रात से सोनीपत रेलवे स्टेशन पर देखने को मिला। शुक्रवार रात से शनिवार को दिनभर रेलवे स्टेशन पर आरपीएफ, जीआरपी व हरियाणा पुलिसकर्मियों की देखरेख में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रही। पुलिस ने रेलवे स्टेशन पर आने-जाने वाले प्रत्येक संदिग्ध व्यक्ति पर कड़ी नजर बनाए रखी। उधर कई एक्सप्रेस ट्रेनें व सवारी गाड़ियां रद्द होने से शनिवार को दिल्ली, नरेला, पानीपत, करनाल, कुरुक्षेत्र रूट जाने वाले व्यापारियों, नौकरीपेशा लोगों व विद्यार्थियों को परेशानी झेलनी पड़ी।

पुजारी हत्याकांड के आरोपियों की धरपकड़ के लिए दो टीमों का गठन

गोहाना। गांव कथूरा के देवी मंदिर में पुजारी सचिन की पीट-पीटकर हत्या के मामले में आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने दो टीमें गठित की हैं। पुलिस टीमें आरोपितों की पहचान करने और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए प्रयास कर रही हैं। कैथल जिले के गांव रोहेड़ा निवासी 25 वर्षीय सचिन पिछले करीब तीन साल से कथूरा के देवी मंदिर में पुजारी था। पुलिस के अनुसार, बुधवार रात करीब 11 बजे कंट्रोल रूम से मंदिर के पुजारी के साथ मारपीट की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची तो सचिन गंभीर हालत में मिला। उसे अस्पताल ले जाया गया, लेकिन चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामले में मृतक के भाई अमन की शिकायत पर बरोदा थाना में अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया गया है। ग्रामीणों को शक था कि सचिन मंदिर में आने वाली महिलाओं और बच्चियों के साथ अश्लील हरकतें करता था। इसी शक और अफवाहों के बीच ग्रामीणों की भीड़ ने उसके साथ मारपीट की। हालांकि, इन आरोपों की पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी। मृतक के भाई अमन ने बताया था कि सचिन ने दो-तीन दिन पहले फोन पर बातचीत के दौरान कुछ लोगों द्वारा परेशान किए जाने की बात कही थी। अमन ने आरोप लगाया कि गलत अफवाहों के चलते उसके भाई को पीटकर मार डाला गया। उसने यह भी आशंका जताई कि रंजिश रखने वाले किसी व्यक्ति ने अफवाह फैलाई हो सकती है। पुलिस मामले में घटनाक्रम की जांच कर रही है।

■ कथूरा के देवी मंदिर में पुजारी था सचिन

काम दिलाने के बहाने कार्यालय बुलाकर वेल्डिंग मिस्त्री से मारपीट

सोनीपत। कबीरपुर निवासी वेल्डिंग मिस्त्री को वाहन की वेल्डिंग का काम दिलाने के बहाने दिल्ली के नरेला स्थित कार्यालय में बुलाकर मारपीट करने का मामला सामने आया है। पीड़ित दीपक ने आशु, चेतन और मौजी सहित 30-40 लोगों पर डंडों और लोहे की रॉड से हमला करने का आरोप लगाया है। पीड़ित के अनुसार, हमलावरों ने उसका मोबाइल फोन भी तोड़ दिया और परिवार सहित जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने दीपक के बयान पर प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। दीपक ने पुलिस को बताया कि 4 अक्तूबर को उसके मोबाइल पर फोन आया था। फोन करने वालों ने वाहन की वेल्डिंग का काम कराने की बात कही थी। इसके बाद 5 अक्तूबर को आशु उसे अपने साथ दिल्ली के नरेला स्थित एक कार्यालय में ले गया। दीपक के अनुसार, वहां पहुंचने पर उसे वेल्डिंग का काम नहीं मिला। इसके बजाय वहां मौजूद लोगों ने उस पर मुखबिरी करने का आरोप लगाते हुए मारपीट शुरू कर दी। आरोप है कि हमलावरों ने डंडों और लोहे की रॉड से उसकी पिटाई की। मारपीट के बाद वे उसे गांव की चौपाल के पास छोड़कर चले गए। घटना के संबंध में 7 अक्तूबर को डायल 112 पर सूचना दी गई। इसके बाद 9 अक्तूबर को दीपक बीपीएस खानपुर कलां अस्पताल में दाखिल मिला।

■ 30-40 लोगों ने डंडों और लोहे की रॉड से हमला किया

SARITA JAIN
PARAMEDICAL INSTITUTE
BEST ADMISSION GUIDELINES CENTRE
GNM NURSING
D. PHARMA
B.Sc. NURSING
MEDICAL LAB TECHNOLOGY
OPERATION THEATRE TECHNOLOGY
RADIOLOGY & MEDICAL IMAGING TECHNOLOGY
OPTOMETRY TECHNOLOGY
DIALYSIS TECHNOLOGY
B.ED
D.EL.ED
Mehalana Road, Sector-23, Sonipat-131001
Mob. : 8529212507, 9082982000, Website : saritajainparamedical.com

कंपनी की गाड़ियों में बिल से अधिक चाय पत्ती लोड कर बेचने के आरोप में दो गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

बहालगढ़ थाना पुलिस ने कंपनी की गाड़ियों में बिल से अधिक चाय के डिब्बे लोड कर बाहर बेचने के मामले में दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। उनकी पहचान गांव गढ़ी बाला निवासी प्रवीन और गांव हरसाना कलां निवासी प्रिंस के रूप में हुई है। दोनों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से पांच दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है। पुलिस के अनुसार, टीडीआई कुंडली निवासी अंकित ने 18 मई 2026 को शिकायत दी थी कि वह आदर्श मार्केटिंग में प्रबंधक के पद पर कार्यरत है। कंपनी से प्रतिदिन चाय, नमक और अन्य सामान से लदी करीब 100 गाड़ियों का आवागमन होता है। पिछले कुछ समय से चाय की गाड़ियों से माल कम मिलने की शिकायतें मिल रही थीं। कंपनी स्तर पर जांच में कथित तौर पर सामने आया कि कुछ गाड़ियों में बिल और बिल्टी में दर्ज मात्रा से अधिक माल लोड किया जाता था और अतिरिक्त माल बाहर बेच दिया जाता था। शिकायत में सुपरवाइजरों और परिवहन से जुड़े चालकों की संलिप्तता का संदेह जताया गया था। सीसीटीवी फुटेज से माल की मात्रा की पुष्टि की गई। सहायक उप निरीक्षक अनिल की टीम ने दोनों आरोपितों को गिरफ्तार किया।



मंडोरा के दुकानदार संजय की हत्या के तीन दोषियों को उम्रकैद व जुर्माना

सोनीपत। गांव मंडोरा में दुकानदार संजय की गोली मारकर हत्या करने के मामले में अदालत ने तीन दोषियों को उम्रकैद की सजा सुनाई है। अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. नरिंदर कौर की अदालत ने रोमिल, मयंक और आशीष उर्फ आशी को हत्या और आपराधिक षड्यंत्र का दोषी करार दिया। अदालत ने तीनों पर हत्या और षड्यंत्र के लिए 20-20 हजार रुपये जुर्माना भी लगाया है। वहीं, मामले में नरेश उर्फ निशु को शस्त्र अधिनियम के तहत दोषी ठहराते हुए तीन साल कैद और एक हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई। पर्याप्त साक्ष्य नहीं मिलने पर छह अन्य आरोपितों को बरी कर दिया गया। मामला 5 जून 2020 का है। गांव मंडोरा निवासी संजय बस स्टैंड के पास अपनी परचून की दुकान पर बैठे थे। उनकी पत्नी इंदु ने पुलिस को बताया था कि शाम के समय वह दुकान पर पहुंची तो बाइक और स्कूटी सवार युवक वहां आए। आरोप था कि स्कूटी पर आए रोमिल ने संजय के सीने में गोली मारी, जबकि उसके साथियों ने उनकी कनपटी पर गोलियां चलाईं। इंदु ने बचाव का प्रयास किया तो आरोपित धमकी देकर मौके से फरार हो गए। पुलिस ने मामले में मंडोरा निवासी रोमिल, मयंक और आशीष उर्फ आशी तथा हलालपुर निवासी नरेश उर्फ निशु सहित दस लोगों को गिरफ्तार किया था। अन्य आरोपितों में विक्रम उर्फ विक्की, प्रीतम, परवीन, रोहित उर्फ ढीला, मंजीत और अंकित शामिल थे। नवंबर 2020 में मयंक, रोहित और आशीष को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया गया था। इस दौरान मयंक और रोहित को गोली लगी थी।

रोमिल को अन्य मामलों में भी सजा: अदालत ने तीनों दोषियों को घातक हथियार के साथ दंगा करने के मामले में भी दो-दो साल कैद और दो-दो हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई। इसके अलावा रोमिल को स्कूटी पर फर्जी नंबर प्लेट लगाने से जुड़े धोखाधड़ी के मामले में सात साल कैद और पांच हजार रुपये जुर्माना लगाया गया। सभी सजाएं एक साथ चलेंगी। वहीं मुकदमे की सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष ने गवाहों के बयान, विधि विज्ञान प्रयोगशाला की रिपोर्ट और अन्य साक्ष्य पेश किए। अदालत ने विक्रम उर्फ विक्की, प्रीतम, परवीन, रोहित उर्फ ढीला, मंजीत और अंकित के खिलाफ आरोप साबित करने के लिए पर्याप्त प्रत्यक्ष या वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं पाए। इसके बाद छह आरोपितों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया गया।

■ चौथे दोषी नरेश को तीन साल की कैद, छह बरी

श्री बसन्त जैन, माणिक जैन गांव खेवड़ा से पांची
नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं
खोटी ज्वैलरी ना लेकर हमसे 100% शुद्ध ज्वैलरी लें।
जैनसन्स ज्वैलर्स
माँ दुर्गा की असीम कृपा व वरदान मिला होने के कारण हमारी ज्वैलरी आपको व आपके परिवार को रूप, जय, यश, शांति, शक्ति, सफलता, आयु, बुद्धि, निरोग काया, अच्छी संतान व हर तरह की खुशी प्रदान करती है। जो लेकर गए हैं उनसे पूछकर देखें, सच्चाई खुद बोलेगी। आप भी एक बार जरूर आजमा कर देखें
नोट : हमारी हर ज्वैलरी पर Government की दी नम्बर प्लेट लगी है जैसे आपकी गाड़ी, पैन कार्ड, आधार कार्ड पर लगी होती है। जिसे Online देखने पर उसकी प्योरिटी, फोटो, कब बनी, कब लैब टैस्ट हुई आदि ज्वैलरी का पूरा विवरण निकल आएगा।
हरियाणा का पहला 100% भारत सरकार की लैब टैस्टिड H.U.I.D. No. लगी ज्वैलरी शोरूम
जो अपने माँ-बाप, अपने खून का नहीं वो किसी का नहीं
कब बनाई, कम रेट सस्ती ज्वैलरी नकली हॉलमार्क HUID डीप की हुई लोकल व खोटी ज्वैलरी ना लेकर जैनसन्स ज्वैलर्स से भारत सरकार की थ्री ग्राइंडिंग, हाई पॉलिश, ग्लास फिनिशिंग व नीस की हुई अद्भुत अविश्वसनीय इम्पोर्टिड ज्वैलरी जैसे टर्की, इटैलियन, स्कॉटलैंड, दुबई, ब्राजील व हांगकांग के नये-नये डिजाइन की ज्वैलरी सबसे अच्छी, सस्ती सबसे बढ़िया और 100% प्योर भी।
हमारे यहा राशि के असली नग नलीम, पुखराज आदि लैब टैस्टिड उपलब्ध हैं।
आवश्यकता है
सेल्समेन और सेल्सगर्ल की
अच्छी सेलरी के साथ
नोट : डायमंड की इम्पोर्टिड ज्वैलरी फैक्ट्री रेट पर उपलब्ध है।
जैनसन्स रोड, सुभाष चौक सोनीपत (स्वर्णप्रस्थ)

एक पन्ने की वित्तीय योजना से बिखरे पैसे को दें सही दिशा

▶▶ कमाई आते ही तय करें किस हिस्से से खर्च, सुरक्षा, कर्ज और निवेश ▶▶ छोटी लेकिन स्पष्ट योजना लंबे समय में बना सकती है बड़ा कोष ▶▶ बीमा, आपातकालीन निधि, कर्ज और निवेश का तय करें क्रम ▶▶ हर महीने आय आते ही पैसा अपने लक्ष्य के अनुसार ही करें आवंटित

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

कमाई अच्छी होने के बावजूद कई लोगों की आर्थिक स्थिति इसलिए मजबूत नहीं हो पाती, क्योंकि उनका पैसा अलग-अलग जगह बिखरा रहता है। किसी बैंक खाते में कुछ रकम, कहीं बीमा पॉलिसी, क्रेडिट कार्ड का बकाया, किसी म्यूचुअल फंड में छोटी-सी राशि और थोड़ी बचत घर में... लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि कुल संपत्ति कितनी है और किस लक्ष्य के लिए कितना पैसा जमा किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में जरूरत निवेश के नए विकल्प तलाशने की नहीं, बल्कि पहले से मौजूद पैसों को व्यवस्थित करने की होती है। इसके लिए जरूरी नहीं कि कोई जटिल वित्तीय योजना बनाई जाए। एक पन्ने पर आय, खर्च, कर्ज, सुरक्षा और निवेश की पूरी तस्वीर लिखना भी काफी मददगार हो सकता है। इस योजना का मकसद यह तय करना है कि कमाई खाते में आते ही पैसा कहां और कितना जाएगा, ताकि खर्च के बाद जो बचे उसी से निवेश करने की आदत न बने।

पहला कदम : आर्थिक सुरक्षा मजबूत करें

निवेश शुरू करने से पहले वित्तीय सुरक्षा की नींव मजबूत करना जरूरी है। यदि परिवार में आपकी आय पर दूसरे सदस्य निर्भर हैं तो पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा और जरूरत के अनुसार टर्म जीवन बीमा पर ध्यान देना चाहिए। बीमा का उद्देश्य निवेश से कमाई करना नहीं, बल्कि अचानक आने वाले बड़े आर्थिक संकट से परिवार को बचाना है। इसी तरह कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी घरेलू खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि के रूप में अलग रखना उपयोगी है। इसे ऐसे साधन में रखा जाना चाहिए, जहां जरूरत पड़ने पर रकम आसानी से उपलब्ध हो। इस पैसे को शेयर बाजार में लगाकर ज्यादा रिटर्न कमाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

दूसरा कदम : महंगे कर्ज से पहले छुटकारा

अगर क्रेडिट कार्ड, व्यक्तिगत ऋण या किसी तत्काल ऋण पर बहुत ज्यादा ब्याज दिया जा रहा है तो निवेश बढ़ाने से पहले ऐसे कर्ज को खत्म करना प्राथमिकता होनी चाहिए। मसलन, क्रेडिट कार्ड का बकाया लंबे समय तक छोड़ने पर ब्याज तेजी से बढ़ सकता है। ऐसे कर्ज के रहते बाजार में निवेश करके ज्यादा रिटर्न कमाने की उम्मीद करना जोखिम भरा हो सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं। सामने बकाया रकम, ब्याज दर और हर महीने की किस्त लिखें। ज्यादा ब्याज वाले असुरक्षित कर्ज को पहले चुकाने की कोशिश करें।



हर महीने नहीं, समय समय पर करें समीक्षा

वित्तीय योजना का मतलब रोज शेयर बाजार देखना या बार-बार निवेश बदलना नहीं है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। लंबी अवधि के निवेशक के लिए अनुशासन और निरंतरता ज्यादा महत्वपूर्ण है। हां, आय बढ़ने, नौकरी बदलने, शादी, बच्चे होने, घर खरीदने या बड़े कर्ज जैसी परिस्थितियों में योजना की समीक्षा जरूर करनी चाहिए।

तीसरा कदम : लक्ष्यों के हिसाब से करें निवेश

सारी बचत को एक ही जगह लगाना सही रणनीति नहीं है। पहले यह तय करें कि पैसा कब चाहिए। पांच साल से कम अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बहुत ज्यादा जोखिम वाले निवेश से बचना बेहतर है। वाहन खरीदना, घर की मरम्मत, बच्चों की निकट अवधि की फीस या अन्य जरूरी खर्च इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए सुरक्षित बचत विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। वहीं 10 साल या उससे अधिक अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति, बच्चों की उच्च शिक्षा या लंबे समय में संपत्ति बनाने जैसे लक्ष्यों के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड या व्यापक बाजार सूचकांक आधारित फंड विकल्प हो सकते हैं। हालांकि निवेश का चुनाव व्यक्ति की जोखिम क्षमता, उम्र, आय और लक्ष्य के अनुसार होना चाहिए।

चौथा कदम : निवेश को अपने आप चलने दें

वित्तीय योजना तभी सफल होती है जब उसे नियमित रूप से लागू किया जाए। इसके लिए एसआईपी जैसी स्वचालित व्यवस्था उपयोगी हो सकती है। वेतन या आय खाते में आते ही निर्धारित रकम निवेश के लिए अलग हो जाए तो महीने के अंत में बची रकम निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। मान लीजिए किसी व्यक्ति की मासिक आय 60 हजार रुपये है। वह जरूरी खर्च और सुरक्षा की रकम तय करने के बाद 10 हजार रुपये लंबे समय के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहता है। यदि हर महीने एक निश्चित तारीख को यह रकम स्वतः निवेश हो जाए तो बाजार की रोजाना की खबरों या मूड के आधार पर निवेश रोकने की संभावना कम होगी।

5वां कदम : लिखें पूरी तस्वीर

- मासिक आय : कितनी रकम हाथ में आती है।
- जरूरी खर्च : घर चलाने में कितना खर्च होता है।
- कर्ज : कितना बकाया है और ब्याज।
- आपातकालीन निधि : कितनी रकम अलग रखी।
- बीमा : स्वास्थ्य और जीवन बीमा कितना है।
- निवेश : हर महीने कितनी रकम और किस लक्ष्य के लिए निवेश होगी।
- लक्ष्य : अगले 3, 5, 10 और 20 साल में किन जरूरतों के लिए पैसा चाहिए।
- एक पन्ने से व्यक्ति को हर माह यह समझने में आसानी होगी कि उसकी आय कहां जा रही है व भविष्य के लिए कितना पैसा तैयार हो रहा है।

पुराने खातों और निवेश की भी करें सफाई

कई लोगों के पास जरूरत से ज्यादा बैंक खाते, क्रेडिट कार्ड और छोटे-छोटे निवेश होते हैं। समय-समय पर इनकी समीक्षा करनी चाहिए। जिन खातों या कार्ड का उपयोग नहीं हो रहा है, उनकी जरूरत और शुल्क की जांच करें। अलग-अलग निवेशों की सूची बनाकर देखें कि कहीं एक ही तरह के कई उत्पाद तो नहीं हैं। साथ ही बैंक खाते, बीमा, म्यूचुअल फंड, शेयर और अन्य वित्तीय निवेशों में नॉमिनी की जानकारी अपडेट रखें। परिवार में किसी अनहोनी की स्थिति में यह छोटी-सी सावधानी बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

पैसा बचाना ही पर्याप्त नहीं, उसे सही दिशा देना जरूरी

एक अच्छी वित्तीय योजना वह नहीं जिसमें सबसे ज्यादा निवेश उत्पाद हों, बल्कि वह है जिसमें हर रुपये की भूमिका स्पष्ट हो। पहले सुरक्षा, फिर महंगे कर्ज से मुक्ति और उसके बाद लक्ष्य आधारित निवेश—यह सरल क्रम आर्थिक अव्यवस्था को व्यवस्थित करने में मदद कर सकता है। योजना एक बार बनाकर भूलने के बजाय साल में कम से कम एक बार उसकी समीक्षा करें। धीरे-धीरे आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम बढ़ाते रहें। यही अनुशासन लंबे समय में छोटी बचत को बड़ा वित्तीय सहारा बना सकता है।

30 की उम्र में निवेश शुरू कर रहे हैं तो पहले साल ऐसे बनाएं मजबूत आधार

- पहले आपातकालीन निधि और महंगे कर्ज से निपटें
- लक्ष्य के हिसाब से बचत और निवेश करना शुरू करें
- लंबी अवधि के लिए एसआईपी और सूचकांक फंड बेहतर विकल्प

जानकारी
बिजनेस डेस्क

अगर आपकी उम्र 30 साल है और आपने अभी तक निवेश शुरू नहीं किया है तो घबराने की जरूरत नहीं है। इस उम्र में आपके पास लंबी अवधि का फायदा उठाने के लिए पर्याप्त समय है। हालांकि निवेश की शुरुआत किसी खास शेयर या म्यूचुअल फंड को चुनने से नहीं, बल्कि अपनी आर्थिक स्थिति समझने से होनी चाहिए। पहले साल का लक्ष्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि ऐसी वित्तीय व्यवस्था तैयार करना होना चाहिए जिसे आने वाले वर्षों में आसानी से जारी रखा जा सके। निवेश शुरू करने से पहले तीन सवालों के जवाब तलाशें-पैसा किस लक्ष्य के लिए चाहिए, कब चाहिए और बाजार में गिरावट आने पर आप कितना जोखिम उठा सकते हैं। इसके आधार पर ही निवेश की दिशा तय होगी।

सबसे पहले बनाएं आपातकालीन निधि

यदि आपके पास बचत नहीं है और क्रेडिट कार्ड या व्यक्तिगत ऋण जैसा महंगा कर्ज चल रहा है तो पहले साल का पूरा ध्यान निवेश बढ़ाने के बजाय वित्तीय आधार मजबूत करने पर होना चाहिए। कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि में रखना उपयोगी है। नौकरी जाने, बीमारी, अचानक बड़े खर्च या किसी अन्य आपात स्थिति में यही रकम काम आएगी। इसे ऐसे विकल्प में रखना चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से निकाला जा सके। आपातकालीन निधि बनने के बाद ही लंबी अवधि के निवेश को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए।



महंगे कर्ज को निवेश से पहले खत्म करें

क्रेडिट कार्ड का बकाया या ज्यादा ब्याज वाला व्यक्तिगत ऋण आपकी आर्थिक प्रगति को धीमा कर सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं और ब्याज दर देखें। ज्यादा ब्याज वाले कर्ज को पहले चुकाना बेहतर है। कर्ज खत्म होने के बाद उसकी मासिक किस्त के बराबर रकम को निवेश में लगाया जा सकता है। इस तरह कर्ज चुकाने की आदत सीधे निवेश की आदत में बदल सकती है।

हर लक्ष्य की तय करें समय सीमा

निवेश का तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि पैसा कब चाहिए। तीन साल के भीतर जरूरत पड़ने वाली रकम को शेयर बाजार जैसे उतार-चढ़ाव वाले साधनों में लगाने से बचना चाहिए। कार खरीदना, शादी, घर की शुरुआती रकम या निकट अवधि की शिक्षा जैसे लक्ष्य इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए बैंक सावधि जमा, आवर्ती जमा या अन्य अपेक्षाकृत सुरक्षित विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। दूसरी ओर, यदि लक्ष्य 10, 15 या 20 साल दूर है तो बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति या बच्चे की उच्च शिक्षा जैसे लंबे लक्ष्यों में महंगाई को ध्यान में रखना जरूरी है।

शुरुआती निवेशक के लिए सूचकांक फंड सरल विकल्प

लंबी अवधि के निवेश की शुरुआत करने वाले निवेशक के लिए व्यापक बाजार सूचकांक पर आधारित म्यूचुअल फंड एक सरल विकल्प हो सकता है। ऐसे फंड किसी प्रमुख सूचकांक की कंपनियों में निवेश करते हैं। इससे एक ही कंपनी पर निर्भरता कम होती है और निवेशक को अलग-अलग शेयर चुनने की जरूरत नहीं पड़ती। हालांकि इक्विटी आधारित निवेश में बाजार जोखिम रहता है। इसलिए इसका इस्तेमाल उन्हीं लक्ष्यों के लिए करना चाहिए जिनकी समय सीमा लंबी हो।

उदाहरण से समझें

मान लीजिए रोहन की उम्र 30 साल है और उसे हर महीने कर कटौती के बाद 80 हजार रुपये मिलते हैं। उसके पास पहले से आपातकालीन निधि है। वह दो साल बाद कार खरीदना चाहता है और साथ ही सेवानिवृत्ति के लिए भी निवेश शुरू करना चाहता है। ऐसी स्थिति में वह अपनी क्षमता के अनुसार, उदाहरण के तौर पर, हर महीने 15 हजार रुपये कार के लक्ष्य के लिए सुरक्षित बचत में और 15 हजार रुपये लंबी अवधि के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड की एसआईपी में लगा सकता है। इस तरह दोनों लक्ष्यों का पैसा अलग रहेगा। कार के लिए रखा पैसा बाजार की गिरावट से प्रभावित नहीं होगा और सेवानिवृत्ति के लिए किया गया निवेश लंबे समय तक बढ़ने का अवसर पाएगा।

जोखिम क्षमता भी समझें

सिर्फ यह देखकर निवेश न करें कि कोई फंड या शेयर पिछले साल कितना बढ़ा। पहले यह समझें कि बाजार में 20-30 प्रतिशत गिरावट आने पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी। मान लीजिए आपने 10 हजार रुपये निवेश किए और कुछ समय बाद उसकी कीमत घटकर 8 हजार रुपये रह गई। यदि इससे आप घबरा कर निवेश बेच देंगे तो इक्विटी निवेश आपके लिए कठिन हो सकता है। लेकिन अगर आप उतार-चढ़ाव को स्वीकार कर लंबे समय तक निवेश बनाए रख सकते हैं तो आपकी जोखिम क्षमता ज्यादा हो सकती है। यानी निवेश का चुनाव केवल रिटर्न देखकर नहीं, बल्कि लक्ष्य और जोखिम क्षमता देखकर करें।

बचत को हर माह की आदत बनाएं

- सबसे कम कमाई वाले महीने को आधार बनाएं
- वेतन आते ही बचत अलग खाते में डालें
- पहले तैयार करें अपने लिए आपातकालीन कोष
- लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार

योजना
बिजनेस डेस्क

कई लोगों की कमाई हर महीने एक जैसी नहीं होती। कभी बोनस मिल जाता है तो कभी अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। ऐसे अच्छे महीने में बचत भी बढ़ जाती है, लेकिन अचानक आया बड़ा खर्च या कम आय वाला महीना पूरी बचत खत्म कर देता है। नतीजा यह होता है कि कई साल कमाने के बाद भी व्यक्ति के पास आपात स्थिति के लिए पर्याप्त रकम नहीं होती। समस्या हमेशा कम कमाई नहीं होती, बल्कि नियमित बचत के लिए तय व्यवस्था का अभाव भी इसका बड़ा कारण है। वित्तीय मजबूती के लिए बचत को महीने के अंत में बची रकम पर निर्भर करने के बजाय इसे कमाई का पहला काम बनाना जरूरी है। यानी पैसा आते ही बचत की रकम अलग और उसके बाद खर्च। यही छोटी आदत लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार कर सकती है।

पहले समझें, बचत क्यों नहीं हो रही

बचत शुरू करने से पहले यह पता लगाना जरूरी है कि पैसा बच क्यों नहीं रहा। कुछ लोगों की आय हर महीने बदलती है। स्वतंत्र काम करने वाले, कमीशन पर काम करने वाले या कारोबार से जुड़े लोगों के लिए एक महीने की आय दूसरे महीने से काफी अलग हो सकती है। दूसरी समस्या यह है कि बचत का इरादा तो होता है, लेकिन हर महीने कोई न कोई खर्च उसे पीछे धकेल देता है। कई लोग सोचते हैं कि महीने के अंत में जो रकम बचेगी, उसे बचा लेंगे। व्यवहार में अक्सर महीने के अंत तक बहुत कम रकम बचती है। इसलिए बचत के लिए इच्छा नहीं, व्यवस्था बनाना जरूरी है।

3 माह की आय से तय करें अपना बजट

सबसे पहले पिछले तीन महीनों की कुल आय देखें और उसका औसत निकालें। लेकिन यदि आय में काफी उतार-चढ़ाव रहता है तो औसत आय के बजाय सबसे कम आय वाले महीने को अपना बजट आधार बनाना ज्यादा सुरक्षित हो सकता है। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को तीन महीनों में 40 हजार, 48 हजार और 35 हजार रुपये मिले। औसत आय करीब 41 हजार रुपये बैठती है, लेकिन बजट 35 हजार रुपये की सबसे कम आय को आधार मानकर बनाया जा सकता है। इससे कम आय वाले महीने में भी जरूरी खर्च पूरे करने में परेशानी नहीं होगी। अब इसमें से किराया, राशन, बिजली-पानी, आने-जाने और अन्य जरूरी खर्च अलग करें।



वेतन आते ही पहले बचत करें

नियमित वेतन पाने वालों के लिए सबसे आसान तरीका है—पहले खुद को भुगतान करें। मान लीजिए आपकी मासिक आय 40 हजार रुपये है और आप हर महीने 5 हजार रुपये बचाना चाहते हैं। वेतन खाते में आते ही 5 हजार रुपये दूसरे खाते में स्वतः स्थानांतरित करने की व्यवस्था कर दें। इसके बाद बचे पैसे से महीने का खर्च चलाएं। इसका फायदा यह है कि बचत की रकम खर्च करने वाले खाते में पड़ी ही नहीं रहेगी। बचत को इच्छाशक्ति के भरोसे रखने के बजाय स्वचालित व्यवस्था का हिस्सा बनाया जा सकता है।

आय तय नहीं तो प्रतिशत के हिसाब से बचाएं

यदि कमाई हर महीने अलग है तो निश्चित रकम बचाने के बजाय आय का एक तय प्रतिशत अलग करना बेहतर हो सकता है। उदाहरण के लिए हर भुगतान का 15 से 20 प्रतिशत बचत खाते में डालने का नियम बनाया जा सकता है। मान लीजिए किसी स्वतंत्र पेशेवर की मासिक आय 25 हजार से 60 हजार रुपये के बीच रहती है। वह हर भुगतान का 18 प्रतिशत बचत के लिए अलग करता है। इस तरह कम आय वाले महीने में बचत की रकम कम होगी और ज्यादा कमाई होने पर बचत अपने आप बढ़ जाएगी।

बचत के लिए अलग खाता रखें

बचत और रोजमर्रा के खर्च का पैसा एक ही खाते में रखने से अनजाने में बचत खर्च होने की संभावना रहती है। इसलिए बचत के लिए अलग बैंक खाता रखना उपयोगी हो सकता है। संभव हो तो इसे रोजमर्रा के खाते से अलग बैंक में रखें। बोनस, कर वापसी या अचानक मिली अतिरिक्त रकम का एक हिस्सा सीधे इसी खाते में डाल सकते हैं।

पहले आपातकालीन कोष, बाद में ज्यादा रिटर्न

बचत का पहला उद्देश्य हर बार ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं होना चाहिए। पहले ऐसा आपातकालीन कोष तैयार करें जिससे अचानक आने वाले खर्च के समय निवेश या कर्ज पर निर्भरता कम हो। नियमित वेतन वालों के लिए तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर आपातकालीन निधि एक अच्छा आधार हो सकती है। वहीं जिनकी आय में ज्यादा उतार-चढ़ाव रहता है, वे छह से नौ महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम रखने पर विचार कर सकते हैं। यह रकम ऐसे विकल्प में रखी जानी चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो। आपातकालीन निधि का पहला उद्देश्य सुरक्षा और तरलता है, अधिकतम रिटर्न नहीं।

योजना बनाकर भूल जाना भी ठीक नहीं

बचत की योजना बनाकर उसे भूल जाना भी सही नहीं है। महीने में केवल 15 मिनट निकालकर देखें कि आय कितनी रही, जरूरी खर्च कितना हुआ और तय बचत लक्ष्य पूरा हुआ या नहीं। यदि किराया बढ़ गया, परिवार में नया खर्च जुड़ गया या आय में बदलाव हुआ है तो बचत लक्ष्य में भी बदलाव किया जा सकता है। महत्वपूर्ण यह है कि बचत पूरी तरह बंद न हो।

इन पांच गलतियों से बचें

- महीने के अंत में बचतः तब तक पैसा खत्म हो सकता है।
- एक ही खाते में बचत और खर्चः बचत अनजाने में खर्च हो सकती है।
- सिर्फ अच्छे महीने में बचतः इससे नियमित आदत नहीं बनती।
- बिना बजट तय किए रकम निर्धारित करनाः लक्ष्य आपकी वास्तविक आय से मेल खाना चाहिए।
- योजना की समीक्षा न करनाः आय और खर्च बदलने के साथ बजट भी बदलना चाहिए।

निवेश से पहले बचत की मजबूत नींव जरूरी

शेयर, म्यूचुअल फंड या किसी अन्य निवेश में पैसा लगाने से पहले नियमित बचत की आदत और आपातकालीन निधि तैयार करना जरूरी है। कम रकम से शुरुआत करना कोई समस्या नहीं है। महीने में 500 रुपये भी नियमित रूप से बचाना उस महीने हजारों रुपये बचाकर अगले महीने फिर शून्य पर पहुंचने से बेहतर है।

अलर्ट 3 से 10 साल की अवधि में निवेश करने का बेहतीन विकल्प, लक्ष्य के हिसाब से तय होगी मासिक किस्त, तैयार होगा फंड

बच्चे के नाम हर महीने बचत, तैयार होगा एक लाख का फंड एसबीआई की 'हर घर लखपति' आरडी में 6.7% सालाना ब्याज

समझदारी
बिजनेस डेस्क

बच्चे की पढ़ाई, उच्च शिक्षा या भविष्य की किसी बड़ी जरूरत के लिए समय रहते बचत शुरू करना समझदारी है। ऐसे में अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव से अलग रहकर हर महीने एक निश्चित रकम जमा करना चाहते हैं, तो भारतीय स्टेट बैंक यानी एसबीआई की 'हर घर लखपति' योजना एक विकल्प हो सकती है। यह कोई अलग निवेश उत्पाद नहीं, बल्कि रिकरिंग डिपॉजिट यानी आरडी का एक रूप है। इसमें निवेशक हर महीने एक तय रकम जमा करता है और तय अवधि पूरी होने पर जमा रकम के साथ ब्याज मिलता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस योजना में फिलहाल 6.7% सालाना ब्याज मिल रहा है। निवेश की अवधि 3 साल से 10 साल तक रखी जा सकती है। यानी अभिभावक बच्चे की उम्र और भविष्य के लक्ष्य के हिसाब से अवधि चुन सकते हैं।

क्या है 'हर घर लखपति' योजना?

नाम से लग सकता है कि यह कोई अलग सरकारी योजना है, लेकिन वास्तव में यह एसबीआई की आरडी आधारित सुविधा है। इसका उद्देश्य नियमित बचत के जरिए एक तय लक्ष्य राशि तैयार करना है। इसे सामान्य आरडी की तरह समझ सकते हैं, जिसमें हर महीने एक निश्चित राशि जमा करनी होती है। मसलन, अगर अभिभावक बच्चे के लिए हर महीने थोड़ी रकम अलग रखते हैं तो कुछ वर्षों में यह रकम ब्याज के साथ एक बड़े फंड में बदल सकती है।

3 से 10 साल तक निवेश

इस योजना में 3 साल से 10 साल तक की अवधि चुनी जा सकती है। अवधि का चुनाव बच्चे की जरूरत के हिसाब से करना महत्वपूर्ण है। यदि बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए पांच साल बाद रकम चाहिए तो पांच साल की अवधि वाला लक्ष्य बनाया जा सकता है। अगर जरूरत 10 साल बाद है तो लंबी अवधि का विकल्प चुना जा सकता है। हालांकि निवेश की अवधि तय करते समय यह भी देखना चाहिए कि बीच में पैसों की जरूरत पड़ सकती है या नहीं। समय से पहले आरडी बंद करने पर बैंक के नियम लागू हो सकते हैं।



बच्चे के नाम पर खाता कैसे खुलेगा?

इस योजना में कोई व्यक्ति सिंगल या जॉइंट अकाउंट खोल सकता है। 10 साल से अधिक उम्र के बच्चे के नाम पर भी खाता खोला जा सकता है, लेकिन इसके लिए बच्चे का ठीक से हस्ताक्षर करने में सक्षम होना जरूरी है। यदि बच्चा हस्ताक्षर करने में सक्षम नहीं है तो उसके नाम पर खाता माता-पिता या अभिभावक के साथ खोला जा सकता है। यानी बच्चे की उम्र और उसकी हस्ताक्षर करने की क्षमता के आधार पर खाते का संचालन तय होगा।

1 लाख रुपये का लक्ष्य कैसे पूरा होगा?

अगर आपका लक्ष्य बच्चे के लिए 5 साल में 1 लाख रुपये का फंड तैयार करना है तो उपलब्ध गणना के अनुसार हर महीने करीब 1,420 रुपये जमा करने होंगे। इसी तरह यदि आप 10 साल में 1 लाख रुपये का लक्ष्य रखते हैं तो मासिक जमा करीब 610 रुपये होगी। इससे यह समझना आसान है कि लंबी अवधि चुनने पर मासिक बचत का बोझ कम हो सकता है। हालांकि इन आंकड़ों को उदाहरण के रूप में देखना चाहिए। वास्तविक मासिक किस्त बैंक की लागू ब्याज दर, आरडी की शर्तों और गणना पद्धति के अनुसार बदल सकती है।

लक्ष्य बढ़ाएं तो किस्त भी बढ़ेगी

इस योजना में लक्ष्य केवल 1 लाख रुपये तक सीमित नहीं है। निवेशक अपनी जरूरत के अनुसार 2 लाख, 3 लाख, 4 लाख रुपये या उससे अधिक का लक्ष्य भी निर्धारित कर सकता है। लक्ष्य राशि बढ़ने के साथ मासिक किस्त भी बढ़ेगी। मसलन, जिस परिवार को बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए 4 लाख रुपये का फंड बनाना है, वह छोटी अवधि के बजाय लंबी अवधि चुनकर मासिक निवेश का बोझ कम रखने की कोशिश कर सकता है।

छोटी बचत से बड़ा लक्ष्य

इस योजना का सबसे बड़ा फायदा अनुशासित बचत है। अक्सर परिवार एकमुश्त रकम बचाने की योजना तो बनाते हैं, लेकिन नियमित रूप से पैसा अलग नहीं रख पाते। आरडी में हर महीने तय रकम जमा करने की व्यवस्था होने के कारण बचत की आदत बन सकती है। मान लीजिए परिवार हर महीने करीब 600 रुपये अलग रखता है। यह रकम रोजाना के खर्च में बहुत बड़ी नहीं लगती, लेकिन लंबे समय तक लगातार जमा होने पर ब्याज के साथ एक निश्चित फंड तैयार कर सकती है।

सिर्फ ब्याज देखकर फैसला न करें

हालांकि 6.7% ब्याज आकर्षक लग सकता है, लेकिन निवेश का फैसला केवल ब्याज दर देखकर नहीं करना चाहिए। अभिभावकों को यह भी देखना चाहिए कि बच्चे का लक्ष्य कितने साल बाद है, कितनी रकम की जरूरत होगी और महंगाई के कारण भविष्य में उस लक्ष्य की लागत कितनी बढ़ सकती है। मसलन, आज उच्च शिक्षा पर 5 लाख रुपये खर्च हो रहे हैं तो 8-10 साल बाद यही खर्च काफी अधिक हो सकता है। इसलिए लंबे समय के लक्ष्य के लिए केवल आरडी पर निर्भर रहने के बजाय अन्य निवेश विकल्पों से भी इसकी तुलना करनी चाहिए।

टैक्स और समय से पहले निकासी के नियम भी समझें

आरडी में मिलने वाला ब्याज कर नियमों के दायरे में आ सकता है। इसलिए बड़ी रकम जमा करने से पहले अपनी कर स्थिति के अनुसार जानकारी लेना जरूरी है। इसी तरह अगर बीच में पैसे की जरूरत पड़ती है तो समय से पहले आरडी बंद करने या आंशिक निकासी से जुड़े बैंक के नियम लागू हो सकते हैं। निवेश शुरू करने से पहले एसबीआई की मौजूदा ब्याज दर, आरडी की शर्तें, नाबालिग के खाते के नियम और समय से पहले खाता बंद करने के प्रावधान जरूर जांच लें।

ऐसे समझें योजना

- योजनाः एसबीआई 'हर घर लखपति'
- प्रकारः रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी)
- ब्याज दर 6.7% सालाना
- अवधि 3 से 10 साल
- 5 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 1,420 रुपये मासिक
- 10 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 610 रुपये मासिक
- लक्ष्य 1 लाख से अधिक भी
- खाता सिंगल या जॉइंट
- बच्चे के नाम खाता 10 साल से अधिक उम्र में, शर्तों के अनुसार
- कम उम्र/हस्ताक्षर में असमर्थ बच्चा माता-पिता/अभिभावक के साथ
- ब्याज दर और बैंक के नियम समय के साथ बदल सकते हैं।

खबर संक्षेप



श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ संपन्न

सोनीपत। नंदवानी नगर स्थित शिव वाटिका (शिव मंदिर) में चल रहे सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ अमृत प्रवाह शनिवार को हवन में पूर्णाहुति डालकर व भंडारे के साथ श्रद्धापूर्वक संपन्न हुआ। मंदिर के प्रधान सीताराम भारद्वाज व प्रचार मंत्री गगन ने बताया कि सात दिनों तक चले आध्यात्मिक आयोजन में श्रद्धालु ने श्रद्धाभाव के साथ कथा श्रवण किया। कथा के दौरान देवभूमि हिमाचल से कथावाचक पंडित विनय शर्मा ने चार वेद, पुराण, गीता एवं श्रीमद्भागवत महापुराणों की दिव्य व्याख्या सुनाकर श्रद्धालुओं का मार्गदर्शन किया। कथा की पूर्णाहुति में मुख्य यजमानों व मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने मिलकर हवन में भाग लिया। सभी ने विश्व कल्याण व क्षेत्र की सुख-समृद्धि के लिए भगवान से कामना की। हवन के पश्चात महाआरती व भगवान को भोग लगाकर श्रद्धालुओं के लिए भंडारा लगाया गया। जिसमें आसपास के श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। मंदिर समिति ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी सेवादारों, श्रद्धालुओं का आभार जताया।



पौधरोपण व पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

सोनीपत। पढ़े बढ़े ट्रस्ट, दिल्ली की सोनीपत शाखा के कार्यकर्ताओं ने सरकार के स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत शनिवार को पौधरोपण अभियान चलाया। शहरवासियों को पर्यावरण संतुलन व हरियाली बढ़ाने का संदेश देते हुए बहालगढ़ रोड स्थित ट्रैफिक पुलिस चौकी के पास हुडा पार्क में विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे। इस सामाजिक पहल में स्थानीय लोगों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। साथ ही पौधों की नियमित देखभाल का संकल्प लिया। कार्यकर्ताओं ने कहा कि पौधे लगाना न केवल प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा और बेहतर पर्यावरण देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ट्रस्ट आगे भी इस तरह के जनसेवा एवं पर्यावरण संरक्षण के कार्य जारी रखेगी। इस दौरान ट्रस्ट के सदस्य सुनील अरोड़ा, अनिल चुघ, संजय भूटानी, हरिओम, राहुल मौजूद रहे।



डायल 112 - पर जागरूकता गतिविधियां करवाईं

खरखौदा। सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय खरखौदा में यूथ रेड क्रॉस सेल तथा जनसंपर्क एवं पत्रकारिता सेल के संयुक्त तत्वावधान में हरियाणा सरकार की महत्वाकांक्षी आपातकालीन सेवा हरियाणा 112 इमरजेंसी सर्विसेज पर एक विशेष जागरूकता गतिविधि का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर अनिल कुमार के निर्देशन और दोनों सेल प्रभारी डॉ.प्रमिला देवी, डा.सारिका और डॉ. सुमित के नेतृत्व में किया गया। इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को एक ही नंबर 112 पर उपलब्ध 7 प्रमुख आपातकालीन सेवाओं के बारे में व्यावहारिक जानकारी देना रहा। इन सेवाओं में पुलिस, महिला सुरक्षा, चिकित्सा आपातकाल, अग्निशमन, बाल सुरक्षा, आपदा प्रबंधन एवं एसओएस वन टच सहायता शामिल हैं। इस दौरान विशेष रूप से ट्रिप मॉनिटरिंग सर्विस - आपकी जर्नी, हमारी नजर पर छात्राओं को विस्तार से बताया गया कि ये आपातकालीन सेवाएं अकेले सफर करने वाली छात्राओं और महिलाओं की सुरक्षा के लिए रियल टाइम ट्रैकिंग, त्वरित प्रतिक्रिया और बेहतर समन्वय सुनिश्चित करती है। डॉ प्रमिला ने छात्राओं को बताया कि रेडक्रॉस के 7 सिद्धांतों में मानवता और निष्पक्ष सेवा सर्वोपरि है, और 112 सेवा भी इसी भावना पर आधारित है। डॉ सुमित ने कहा कि सही समय पर सही सूचना पहुंचाना ही जनसंपर्क का मुख्य कार्य है। सभी छात्राएं 112 एप से जुड़ी इन सभी सेवाओं को विस्तार से छात्राओं के व्हाट्सएप ग्रुप महाविद्यालय के फेसबुक पेज महाविद्यालय की वेबसाइट और महाविद्यालय परिसर में लगे हुए पंपलेट आदि को पढ़कर स्वयं जागरूक बने और औरों को भी जागरूक बनाएं।



छात्राओं को तनावमुक्त परीक्षा की तैयारी के टिप्स दिए

गोहाना। राजकीय महिला महाविद्यालय गोहाना में शनिवार को मेंटार-मेंटी बैठक का आयोजन किया गया। इसमें छात्राओं को मध्यावधि परीक्षाओं की तैयारी, प्रश्न-पत्र के प्रारूप और परीक्षा समय-सारणी की जानकारी दी गई। मेंटर्स ने छात्राओं को तनावमुक्त रहकर परीक्षा की तैयारी करने के टिप्स दिए। साथ ही कक्षाओं में नियमित उपस्थिति बनाए रखने और महाविद्यालय परिसर में स्वच्छता का ध्यान रखने के लिए प्रेरित किया। प्राचार्य डा. मीनाक्षी सांगवान और मेंटार-मेंटी समिति के संयोजक डा. मुकेश शर्मा के मार्गदर्शन में हुई बैठक में मेंटर्स ने छात्राओं के साथ संवाद किया। छात्राओं को अभिभावक-शिक्षक बैठक के महत्व के बारे में बताया। मेंटर्स ने समझाया कि नियमित कक्षा उपस्थिति से पढ़ाई में निरंतरता बनी रहती है और आंतरिक मूल्यांकन में भी बेहतर प्रदर्शन किया जा सकता है। महाविद्यालय परिसर में मोबाइल का सीमित उपयोग करने और साफ-सफाई बनाए रखने पर जोर दिया गया। इस दौरान छात्राओं ने पुस्तकालय में इंटरनेट कनेक्टिविटी खराब होने की समस्या भी उठाई। मेंटर्स ने उन्हें आश्वस्त किया कि समस्या का जल्द समाधान कराने का प्रयास किया जाएगा।

अभिभावक-अध्यापक मीटिंग में विद्यार्थियों की प्रगति रिपोर्ट पर डाला प्रकाश



खरखौदा। प्रताप सिंह मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खरखौदा में अभिभावक-अध्यापक बैठक (पीटीएम) का आयोजन किया गया। बैठक का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन, खेलकूद गतिविधियों तथा सर्वांगीण विकास पर चर्चा करना और विद्यालय एवं अभिभावकों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना रहा। बैठक में विद्यार्थियों के अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और शिक्षकों के साथ अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में विद्यालय की प्रधानाचार्या दया दहिया एवं एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. सुबोध दहिया ने अभिभावकों का स्वागत किया। शिक्षकों ने अभिभावकों को विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों, कक्षा में प्रदर्शन, नियमित उपस्थिति, व्यवहार एवं सुधार की आवश्यकता वाले विषयों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। प्रधानाचार्या दया दहिया ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में विद्यालय और अभिभावकों की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण है। बच्चों को केवल किताबी ज्ञान देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनमें अनुशासन, संस्कार, आत्मविश्वास, जिम्मेदारी और सकारात्मक सोच विकसित करना भी आवश्यक है। उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि वे बच्चों की पढ़ाई के साथ-साथ उनकी दिनचर्या, खानपान, मोबाइल के उपयोग और मानसिक स्थिति पर भी ध्यान दें।

हिसार जिला 9500 से ज्यादा छात्रों का पंजीकरण कर पहले स्थान पर

केबीसी-3.0: शिक्षा मंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट में 7798 बच्चों का पंजीकरण कर सोनीपत दूसरे स्थान पर रहा

- प्रदेशभर में 23 जिलों में अब तक 1,14,398 विद्यार्थियों का पंजीकरण पूरा कर लिया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत



सोनीपत। सेक्टर-14 स्थित जिला शिक्षा विभाग का कार्यालय। फोटो : हरिभूमि

राजकीय विद्यालयों की विभिन्न गतिविधियों में शामिल प्रदेश के शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा के ड्रीम प्रोजेक्ट कौशल बिजनेस चैलेंज (केबीसी-3.0) योजना की आगामी प्रक्रिया में भाग लेने के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करवाने में सोनीपत जिले ने हरियाणा में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। जिले के 7798 विद्यार्थियों का अब तक पंजीकरण पूरा किया गया है, जबकि हिसार 9500 से ज्यादा छात्रों का पंजीकरण कर पहले स्थान पर बना है। प्रदेशभर की बात करें, तो 23 जिलों में अब तक 1,14,398 विद्यार्थियों का पंजीकरण पूरा कर लिया गया है।

बता दें कि समग्र शिक्षा के तहत निदेशालय ने उद्यम लर्निंग फाउंडेशन के सहयोग से प्रदेशभर के राजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को किताबी ज्ञान के साथ नए बिजनेस लीडर्स बनाने का लक्ष्य रखा है। इस बीच विद्यालय शिक्षा निदेशालय की रिपोर्ट के अनुसार योजना में प्रदेश के करीब 30 प्रतिशत विद्यालयों ने विद्यार्थियों के पंजीकरण में खास रूचि नहीं दिखाई है। ऐसे में निदेशालय ने पंजीकरण की अवधि को 10 अक्तूबर से बढ़ाकर अब 20 अक्तूबर कर दिया है। सभी विद्यालय प्रबंधकों को सख्त हिदायत दी गई है कि वह योजना के लिए ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थियों का पंजीकरण करवाना सुनिश्चित करें। उच्च अधिकारियों ने जिलेभर के 211 प्राचार्यों के साथ ऑनलाइन बैठक कर केबीसी-3.0 योजना से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए हैं। उधर परियोजना को सिरे चढ़ाने के लिए विद्यालयों को अब तक बजट जारी नहीं हो पाया। जिससे शिक्षा मंत्री का सपना अधर में लटकता दिख रहा है। एक माह बीतने के बावजूद जिले के 212 शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का कार्य शुरू नहीं हो पाया है।

शिक्षकों के साथ प्राचार्यों को जिम्मेदारियां सौंपी

सरकार व निदेशालय लगातार नई शिक्षा नीति के तहत कौशल शिक्षा और नवाचार पर जोर दे रहे हैं। निदेशालय ने केबीसी 3.0 योजना में विद्यार्थियों के सहयोग के लिए शिक्षकों के साथ प्राचार्यों को भी जिम्मेदारियां सौंपी हैं। सभी संबंधित स्कूलों के 211 प्राचार्यों को निर्धारित अवधि में ऑनलाइन पंजीकरण कार्य पूरा करने के दिशा-निर्देश दिए गए हैं। डायट में होने वाले विशेष प्रशिक्षण शिविर के लिए जल्द शेड्यूल तैयार किया जाएगा।

-कृष्णा खत्री, जिला परियोजना संयोजक, सोनीपत

प्राचार्यों को दिए गए हैं दिशा-निर्देश

निदेशालय ने राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को बिजनेस लीडर्स बनाने और उनमें नवाचार आइडिया विकसित करने की कार्यभार संबंधित स्कूलों के प्राचार्य व शिक्षकों के कंधों पर सौंपा है। इसके लिए 23 सितंबर को जिले के करीब 211 प्राचार्य की केबीसी-3.0 योजना के तहत उद्यम लर्निंग फाउंडेशन एवं केबीसी के जिला नोडल अधिकारी अंकित शर्मा के साथ ऑनलाइन माध्यम से बैठक करवाकर दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इस ऑनलाइन बैठक में जिला सह परियोजना संयोजक (एपीसी) डॉ. अत्तर सिंह, अमित मनवाला भी मौजूद रहे थे। एपीसी बताया कि केबीसी-3.0 योजना की शुरुआत व विद्यार्थियों में बिजनेस की अलख जगाने की तैयारी शुरू कर दी गई है।

नौकरी पर नहीं रहना पड़ेगा निर्भर

शैक्षणिक सत्र 2026-27 में राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी केबीसी-3.0 के तहत जल्द अपने नवाचारी बिजनेस आइडिया प्रस्तुत करेंगे। इससे विद्यार्थी नए नवाचार बिजनेस संबंधी कार्य करने की योजना तैयार कर उद्योग की राह पकड़ सकेंगे। इससे उन्हें भविष्य में नौकरी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। विद्यार्थियों की मदद के लिए प्रत्येक राजकीय माध्यमिक विद्यालय से 2 और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय से 4 शिक्षकों का चयन किया गया है। यह शिक्षक प्रशिक्षण के बाद विद्यार्थियों को बिजनेस आइडिया, मार्केटिंग व उत्पाद बेचने के नए-नए प्लेटफार्म संबंधी जानकारी देंगे। जिसके बाद कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों से उनके आइडिया लेकर प्रतियोगिताओं का दौर शुरू होगा।

स्वरोजगार स्थापित करने की जागरूकता ही उद्देश्य

केबीसी-3.0 योजना का उद्देश्य विद्यार्थियों को नौकरी के बजाय उन्हें स्वरोजगार स्थापित करने के प्रति जागरूक करना है। इसके लिए जिले के प्रत्येक ब्लॉक से चुने गए कुल 14 मास्टर ट्रेनरों को पलवल स्थित श्री विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी में प्रशिक्षण दिलवाया गया है। यह मास्टर ट्रेनर जल्द विभिन्न विद्यालयों के चयनित 212 शिक्षकों का योजना पर मार्गदर्शन करेंगे। बीसवां मील स्थित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) में होने वाले विशेष प्रशिक्षण शिविर का जल्द शेड्यूल तैयार किया जाएगा। इस बार निदेशालय ने योजना में प्राचार्यों को भी हस्तक्षेप कर शिक्षकों व विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी सौंपी है।

वोट चोरी षड्यंत्र को समझ चुकी है जनता : इंदुराज

गोहाना। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार शनिवार को बरोदा विधानसभा कार्यालय, गोहाना में कथूरा खंड स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पार्टी कथूरा खंड अध्यक्ष मास्टर राकेश शर्मा ने की। मुख्य वक्ता बरोदा हलका के कांग्रेस विधायक इंदुराज नरवाल ने कहा कि भाजपा ने वोट चोरी करके एक षड्यंत्र के तहत सत्ता हासिल करने का काम किया है। लोग अब भाजपा के वोट चोरी षड्यंत्र को समझ चुके हैं। चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग, पोलिंग बूथ पर मोबाइल से रिकॉर्डिंग कराने, वोटर लिस्ट के विशेष गहन पुनरीक्षा बारे व वोट चोरी के आरोपों को लेकर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पार्टी नेताओं के साथ दिल्ली में धरने पर बैठे हैं। विधायक ने कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं से अधिक से अधिक संख्या में दिल्ली कूच करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि खंड स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन में लोगों की भारी भीड़ का एकत्रित होना उनमें कांग्रेस पार्टी के प्रति उत्साह एवं समर्पण का प्रतीक है। सम्मेलन में संजीव दहिया, मलिक राज मलिक, परमेंद्र जौली, धर्मपाल नरवाल, मास्टर जगदीश, जितेंद्र जांगड़ा, ऋतुराज सिवाच, रघुबीर सहरावत, रवि इंद्रौरा व बंसी वाल्मीकि सहित पार्टी के अन्य नेता व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।



रोमांचक क्रिकेट मुकाबले में सोनीपत कॉर्पोरेट क्रिकेटर्स ने फिम्स हॉस्पिटल को दी मात

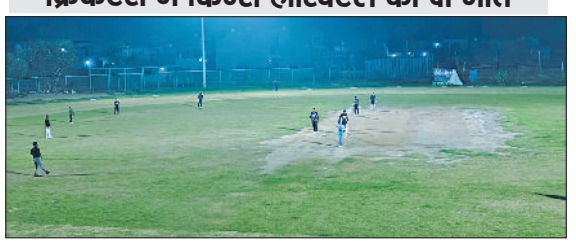

सोनीपत। सोनीपत में खेल मैदान पर हुए एक रोमांचक क्रिकेट मुकाबले में सोनीपत कॉर्पोरेट क्रिकेटर्स की टीम ने फिम्स हॉस्पिटल की टीम को चार विकेट से हराकर जीत को अपने नाम किया। मुकाबले में दोनों ही टीमों के खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया, लेकिन अंत में सोनीपत कॉर्पोरेट क्रिकेटर्स ने बाजी मारी। फिम्स हॉस्पिटल की टीम ने 20 ओवर में 6 विकेट पर 192 रन बनाए, जबकि सोनीपत कॉर्पोरेट क्रिकेटर्स ने 19.1 ओवर में 7 विकेट पर लक्ष्य हासिल किया। अंकुश ने 4 गेंदों में दो छक्कों की मदद से नाबाद 14 रन का टीम को सहयोग दिया। मुकाबले के दौरान पहले बल्लेबाजी करते हुए फिम्स हॉस्पिटल की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में 6 विकेट के नुकसान पर 192 रनों का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया। टीम की तरफ से बल्लेबाजी करते हुए रजत जैन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 25 गेंदों में 8 चौकों और एक छक्के की मदद से 49 रनों की धमाकेदार पारी खेली। इसके अलावा रिजवान ने 31 गेंदों में 44 रन और राणा ने 23 गेंदों में 3 छक्कों की मदद से 36 रनों का योगदान दिया। गेंदबाजी में सोनीपत कॉर्पोरेट क्रिकेटर्स की ओर से जतिन गुप्ता ने 2 विकेट झटके, जबकि करण, अंकुश और दीपक वर्मा ने एक-एक बल्लेबाज को पवेलियन का रास्ता दिखाया। कप्तान लोकेश गर्ग ने बताया कि लक्ष्य का पीछा करने उतरी सोनीपत कॉर्पोरेट क्रिकेटर्स की टीम ने सधी हुई शुरुआत की और 19.1 ओवरों में सात विकेट के नुकसान पर 196 रन बनाकर लक्ष्य हासिल कर लिया।

खबर संक्षेप



अत्यधिक सोचने की समस्या से निपटने के उपाय बताए

सोनीपत। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर जीवीएम महिला कॉलेज के मनोविज्ञान विभाग की ओर से जागरूकता व्याख्यान आयोजित किया गया। संस्था के प्रधान डॉ. ओपी परूथी और प्राचार्या डॉ. मंजुला स्पाह के मार्गदर्शन में हुए कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण के प्रति जागरूक करना था। मुख्य वक्ता डॉ. कामाक्षी ने अपने अनुभवों और उदाहरणों से मानसिक स्वास्थ्य का महत्व समझाया। वह परामर्श मनोवैज्ञानिक, मानसिक स्वास्थ्य ब्लॉगर और कॉलेज की पूर्व छात्रा हैं। उन्होंने तनाव से निपटने, अत्यधिक सोचने की आदत कम करने और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के उपाय बताए। प्राचार्या डॉ. मंजुला स्पाह ने आत्मविश्वास, भावनात्मक संतुलन और आपसी विश्वास को जीवन के लिए जरूरी बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी भावनाएं समझने और आवश्यकता पड़ने पर सहायता लेने के लिए प्रेरित किया। गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की सहभागिता भी सुनिश्चित की गई। इस अवसर पर मनोविज्ञान विभाग की प्राध्यापिकाएं अर्चना खुराना, विधि, रोजी चोपड़ा, कमलेश चोपड़ा, संगीता शर्मा, रोहिणी मदान, डॉ. किरण कपूर और मोहित सहित अन्य प्राध्यापक उपस्थित रहे।



ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी में संगोष्ठी

सोनीपत। ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी में शनिवार को 'कहानी-कथन द्वारा शिक्षण' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इसका उद्देश्य शिक्षकों को कहानियों के माध्यम से विद्यार्थियों को विषयों की अवधारणाएं सरल, रोचक और प्रभावी ढंग से समझाने के तरीके बताना था। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की प्राचार्या चंचल शर्मा और मुख्य वक्ता मीनाक्षी एवं मनीषा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मीनू शर्मा भी उपस्थित रहीं। मुख्य वक्ताओं ने गतिविधियों और व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से बताया कि कहानी-कथन से विद्यार्थियों की रुचि, कल्पनाशीलता और रचनात्मकता बढ़ाई जा सकती है। इससे कठिन विषयों को सरलता से समझने और लंबे समय तक याद रखने में मदद मिलती है।



कागज की कीमतों में बढ़ोतरी के विरोध में 12 से 16 अक्टूबर तक खरीद बंद करने की अपील

सोनीपत। कागज मिलों की ओर से अचानक कीमतें बढ़ाने के विरोध में उत्तर भारत की सात क्षेत्रीय संस्थाओं ने 12 से 16 अक्टूबर तक कागज की खरीद का पांच दिवसीय बहिष्कार करने की अपील की है। हरियाणा कॉरुगेटेड बॉक्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन की ओर से 9 अक्टूबर को कुंडली स्थित किआ सभागार में आयोजित बैठक में यह निर्णय लिया गया। इसमें हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान और दिल्ली की संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। फेडरेशन ऑफ कॉरुगेटेड बॉक्स मैन्युफैक्चरर्स ऑफ इंडिया के अध्यक्ष राजेंद्र भाटी और हरियाणा एसोसिएशन के अध्यक्ष सनी जैन ने कागज की कीमतों में पारदर्शिता, बढ़ोतरी से पहले सूचना और उचित व्यावसायिक व्यवस्था की मांग उठाई। सनी जैन ने कहा कि अचानक कीमतें बढ़ने से गत्ते के डिब्बे बनाने वाले उद्यमियों पर दोहरी मार पड़ती है। पहले से मिले ऑर्डर की आपूर्ति पुरानी दरों पर करनी पड़ती है, जिससे लाभ घटता है और कई बार नुकसान भी उठाना पड़ता है। इससे कारोबार की पूंजी पर दबाव बढ़ता है।



चौड़ी सड़क का निर्माण जल्द पूरा कराने और बिजली आपूर्ति सुचारू करने की मांग उठाई

गन्नौर। अधूरी सड़क और बार-बार बिजली कटौती से परेशान निवासियों की समस्याओं को लेकर डिवाइन सिटी में रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन ने संबंधित विभागों के अधिकारियों से मुलाकात कर समाधान की मांग की। एसोसिएशन ने सेक्टर-7 व सेक्टर-13 की 45 मीटर चौड़ी सड़क का निर्माण जल्द पूरा कराने, बिजली आपूर्ति सुचारू करने और लंबित बिजली कनेक्शन संबंधी कार्यों को प्राथमिकता से निपटाने की मांग उठाई। इस अवसर पर एसोसिएशन के प्रधान बृजेश गुलिया व अन्य एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने सोनीपत मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी (एसएमडीए) के अधीक्षण अभियंता (इंफ्रास्ट्रक्चर) को ज्ञापन सौंपकर सड़क निर्माण में हो रही देरी का मुद्दा उठाया। उन्होंने बताया कि सड़क अधूरी होने से कॉलोनी के निवासियों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

कपास की फसल को बढ़ावा देने के लिए मेले का आयोजन

खरखौदा। उपमंडल कृषि अधिकारी डॉ. संदीप वर्मा की अध्यक्षता में कपास को बढावा देने के लिए सावित्री बाई फूले कन्या महाविद्यालय के सभागार में किसान मेले का आयोजन किया गया। जिसमें विधायक पवन खरखौदा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए और किसानों को ज्यादा से ज्यादा कपास उगाने के लिए प्रेरित किया। मेले में आए हुए कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों ने किसानों को कपास की फसल में लगने वाले कीटों व रोगों की रोकथाम के बारे में पूर्ण जानकारी दी व कपास उगाने से लेकर कटने तक पूर्ण जानकारी दी। डॉ संदीप वर्मा ने कपास में लगने वाले मुख्य कीट गुलाबी सुंडी की रोकथाम के बारे में बताया व गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु रासायनिक दवाईयों के बारे में बताया। इस मेले खंड कृषि अधिकारी समालखा डॉ नवीन लठवाल ने भी कपास की फसल को बढावा देने के लिए किसानों को जागरूक किया। इस अवसर पर एसएमएस डॉ कपिल, डॉ निदिप, डॉ निरंजन (टीए) आदि मौजूद रहे।





समरसता ही समाज की तरक्की का मूल आधार : मुख्तार

गोहाना। पांचाल महापंचायत के सह-संयोजक मुख्तार सिंह दांगी ने कहा कि जिस समाज ने समरसता को अपनाया है, वह हमेशा तरक्की के रास्ते पर चला है। वे चोपड़ा कालोनी में पांचाल समाज की बैठक में विचार व्यक्त कर रहे थे। विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण धर्मशाला पांडू पिंडारा में रविवार को राज्य स्तरीय समरसता महापंचायत होगी। उन्होंने लोगों ने महापंचायत में पहुंचने का आह्वान किया। दांगी ने कहा कि समरसता ही समाज की सबसे बड़ी ताकत है। जहां प्रेम, एकता और भाईचारा है, वहां विकास अपने आप आता है। आज समाज को जरूरत है कि अमीरी-गरीबी और ऊंच-नीच के भेदभाव को भुलाकर सुख-दुख में एक दूसरे के साथ खड़े हों। अध्यक्षता समाजसेवी राजेश ढलवाल ने की। पांचाल समाज मेहनती और हुनरमंद है। समरसता के साथ शिक्षा को बढ़ावा देंगे तो हमारा समाज देश में मिसाल बन सकता है। बैठक में आजाद सिंह डांगी, कृष्ण लाल पांचाल, श्यामलाल पांचाल व जगदीश पटवा सहित समाज के अन्य प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

आचार्यों को विभिन्न गतिविधियों में दक्षता का ज्ञान दिया



गोहाना। गीता विद्या मंदिर, गोहाना की छात्रा शाखा में शनिवार को आचार्य दक्षता वर्ग का आयोजन किया गया। विद्यालय के प्राचार्य अश्वनी कुमार के दिशा-निर्देशन में इस कार्यक्रम में देवेंद्र और विनिका ने शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आचार्यों के ज्ञान, कौशल एवं शिक्षण दक्षता में वृद्धि करना रहा। कार्यक्रम में देवेंद्र ने प्रातः स्मरण एवं एकात्मता मंत्र, जनता चहल ने योगासन एवं प्राणायाम, शीला, हेमलता एवं रेखा ने वंदना, संगीत ने कविता, कमलेश ने अमृत वचन तथा मुनेश ने गीत अभ्यास करवाया। रीना ने जॉयफुल लर्निंग विषय पर दिशाबोध दिया। मयंक ने स्पोकन इंग्लिश सत्र में अंग्रेजी सीखने के विभिन्न स्तरों को सरलता से समझाया, जिसमें शैलजा ने अपना सहयोग किया। अनिल ने कंप्यूटर संचालन की जानकारी दी तथा ध्वनि-वर्धक यंत्रों की व्यवस्था दलजीत ने संभाली। समीक्षा सत्र में प्राचार्य अश्वनी कुमार ने कहा कि दक्षता वर्ग आचार्यों की कार्यकुशलता बढ़ाने, शिक्षण को प्रभावी बनाने तथा विद्यालय की शैक्षिक एवं संस्कारपरक गतिविधियों को नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होता है। पर्यवेक्षक की भूमिका राजबाला ने निभाई।

हिंदू महाविद्यालय में 3 दिवसीय फ्रेशर पार्टी एवं टैलेंट हंट शो का समापन

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से लगाए चार चांद



हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

हिंदू महाविद्यालय में स्नातक (यूजी) एवं स्नातकोत्तर (पीजी) संकायों के लिए आयोजित 3 दिवसीय फ्रेशर पार्टी एवं टैलेंट हंट शो का शनिवार को समापन किया गया। अंतिम दिन महाविद्यालय की बीएससी, बीसीए व सभी स्नातकोत्तर कक्षाओं के नवागंतुक विद्यार्थियों के फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नए विद्यार्थियों का महाविद्यालय परिवार में आत्मीय स्वागत करना, उन्हें शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से परिचित कराना रहा। कार्यक्रम में हिंदू संस्था की प्रबंध समिति के सदस्य राजीव आचार्य, सतीश मित्तल परिवार सहित शामिल हुए। मुख्य अतिथि डॉ. बलजीत व विशिष्ट अतिथियों के साथ प्रधानाचार्य डॉ. सीमा गर्ग व साइंस फैकल्टी की वरिष्ठ सदस्य रजनी गुप्ता, डॉ. शुचि ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। फ्रेशर्स पार्टी के दौरान नवागंतुक विद्यार्थियों ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, संगीत, नृत्य तथा मनोरंजक गतिविधियों से कार्यक्रम में चार चांद लगाए। बच्चों के साथ प्राध्यापकों ने भी अपनी प्रस्तुति से सभी को आश्चर्यचकित किया। मंच संचालन डॉ. मीनू व डॉ. निधि ने किया। सभी संकाय के वर्गों के विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताएं आयोजित कर उनके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, प्रतिभा, प्रस्तुति एवं प्रदर्शन के आधार पर विजेताओं का चयन किया गया। प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल की भूमिका डॉ. अरुणा, डॉ. मनीषा, डॉ. सुनील ने निभाई।

श्रेष्ठ खिताब पाने वाले विद्यार्थियों को किया पुरस्कृत

बीएससी वर्ग में कमल को मिस्टर फ्रेशर, लक्षिता को मिस फ्रेशर का खिताब मिला। बीसीए वर्ग में कुनाल को मिस्टर फ्रेशर, शिवानी को मिस फ्रेशर चुना गया। यूजी साइंस में डिंपल को बेस्ट परफोर्मर, देवांशी को मोस्ट टैलेंटिड के खिताब से नवाजा गया। बेस्ट एंकर के रूप में रुपेंद्र, पार्थ, बेस्ट एक्टिंग में संयम व दीपिका को पुरस्कृत किया गया। स्नातकोत्तर वर्ग में एमए (हिस्ट्री) से कुलदीप को मिस्टर फ्रेशर, पायल को मिस फ्रेशर, एमए (हिंदी) से पुष्पा को मिस फ्रेशर, एमए (इंग्लिश) से शीतल को मिस फ्रेशर, एमए (पॉलिटिकल साइंस) से सोनाक्षी को मिस फ्रेशर, एमएससी (केमिस्ट्री) से शिवांग को मिस्टर फ्रेशर, रेणु को मिस फ्रेशर चुना गया। वहीं प्रीति को बेस्ट परफोर्मर चुनी गई। विजेताओं को मुख्य अतिथि डॉ. बलजीत, विशिष्ट अतिथि राजीव आचार्य, सतीश मित्तल, प्रधानाचार्य डॉ. सीमा गर्ग व वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने सैश पहनाकर, पुरस्कार प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

खबर संक्षेप



सोनीपत। शिविर के दौरान जांच करते हुए मेयर राजीव जैन साथ में विधायक निखिल मदान एवं अन्य। फोटो : हरिभूमि

रक्तदान शिविर में 31 यूनिट रक्त एकत्रित

सोनीपत। सोनीपत क्राइम कंट्रोल एंड ह्यूमन राइट्स ऑर्गेनाइजेशन के स्थापना दिवस पर निजी स्कूल में स्वास्थ्य जांच एवं रक्तदान शिविर लगाया गया। कार्यक्रम में विधायक निखिल मदान और महापौर राजीव जैन मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे। दोनों ने दीप प्रज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया। शिविर में युवाओं ने उत्साह के साथ रक्तदान किया और कुल 31 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।



सोनीपत। सेमिनार के दौरान अतिथियों का स्वागत करते हुए। फोटो : हरिभूमि

जागरूकता सप्ताह का सेमिनार के साथ समापन

सोनीपत। विश्व निवेशक सप्ताह के तहत सेबी और आईसीएआई के सहयोग से आयोजित निवेशक जागरूकता सप्ताह का शनिवार को सेमिनार के साथ समापन हुआ। 'समझ से निवेश को सरल बनाएं' विषय पर इस कार्यक्रम का शुभारंभ 6 अक्टूबर को जनसुनवाई के साथ किया गया था।कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआई की वित्तीय बाजार एवं निवेशक जागरूकता समिति ने किया।



एचसीएस टॉपर अभिषेक सरोहा को किया सम्मानित

गन्नौर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं सोनीपत लोकसभा क्षेत्र में मन की बात कार्यक्रम के संयोजक आजाद सिंह नेहरा ने हरियाणा सिविल सेवा (एचसीएस) परीक्षा में पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान हासिल करने वाले गांव बली कुतुबपुर के होनहार बेटे अभिषेक सरोहा को उनके निवास पर पहुंचकर सम्मानित किया। उन्होंने अभिषेक को शॉल भेंट कर उनकी उपलब्धि पर बधाई दी।

पीआर धान की खरीद न होने पर किसानों का मंडी गेट पर धरना

भाकियू एकता सिद्धूपुर के पदाधिकारियों ने नई अनाज मंडी का किया दौरा

- अधिकारियों से सुबह-शाम धान की ढेरियों की जांच करवाने की उठाई मांग, मांगें न मानने पर अनिश्चितकालीन धरना देने की कही बात

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

भारतीय किसान यूनियन एकता सिद्धूपुर के पदाधिकारियों ने शनिवार को रोहतक रोड स्थित नई अनाज मंडी का दौरा किया। किसानों ने सोनीपत की अनाज मंडी में पीआर धान की खरीद शुरू नहीं होने पर मुख्य गेट पर धरना देकर रोष जताया। मामले की जानकारी मिलते ही मार्केट कमेटी के सचिव व हैफेड अधिकारी मौके पर पहुंचे। किसानों ने अधिकारियों से मांग करते हुए कहा कि मंडी में या तो अभी पीआर धान की खरीद शुरू की जाए, अन्यथा वह मार्केट कमेटी के कार्यालय के मुख्य गेट पर अनिश्चितकालीन धरना शुरू करेंगे। इस दौरान किसान नेता अभिमन्यु कोहाड़ व प्रदेश सचिव वीरेंद्र खोखर ने कहा कि सरकार ने 29 सितंबर से पीआर धान की खरीद शुरू करने की घोषणा की थी, लेकिन अब तक सोनीपत की मंडी में खरीद शुरू नहीं हो पाई है। धरना शुरू होने के 1 घंटे बाद अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर पीआर धान की खरीद शुरू करवाई। खरीद के दौरान जिन-जिन ढेरियों में मॉइस्चर 17 या उससे पाया गया, उनका रिकॉर्ड रजिस्टर में दर्ज किया गया। किसानों ने अधिकारियों से मांग की, कि मंडी में रोजाना सुबह 10 बजे और शाम 5 बजे कर्मचारियों को धान की ढेरियों की जांच करनी चाहिए। जिस पर अधिकारियों ने विश्वास दिलाया कि वह अब सुचारू रूप से खरीद जारी रखेंगे। इस दौरान यूनियन के जिला प्रवक्ता देशपाल दहिया, गोहाना ब्लॉक प्रधान राजबीर माजरा, खरखौदा ब्लॉक प्रधान शक्ति दहिया, राजबीर दहिया, पप्पू सरोहा, जयदीप खटकड़, जयप्रकाश सहरावत, प्रकाश दहिया, अजय कुमार सहित काफी किसान मौजूद रहे।





सोनीपत। नई अनाज मंडी स्थित कार्यालय में मार्केट कमेटी सचिव के समक्ष किसानों की मांगें रखते किसान नेता अभिमन्यु कोहाड़ तथा गन्नौर में किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष जय भगवान मलिक व अन्य किसान श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

खाद की किल्लत का समाधान करने की मांग उठाई

गन्नौर। भारतीय किसान यूनियन की मासिक बैठक शनिवार को जाट धर्मशाला में हलका अध्यक्ष बलजीत मलिक की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में किसानों ने विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। गांव ललहेड़ी निवासी किसान नेता रणबीर मलिक के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष जय भगवान मलिक ने कहा कि रणबीर मलिक संगठन के सच्चे, ईमानदार और मेहनती कार्यकर्ता थे। उन्होंने हमेशा किसानों के हितों के लिए कार्य किया। बैठक में किसानों ने गेहूं और गन्ने की बिजाई का समय नजदीक आने के बावजूद डीएपी खाद की किल्लत पर चिंता जताई। किसानों ने कहा कि खाद की पर्याप्त उपलब्धता नहीं होने से उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने सरकार से मांग की कि किसानों की जरूरत के अनुसार डीएपी खाद उपलब्ध करवाई जाए, ताकि बिजाई के कार्य में बाधा न आए। इसके अलावा राजलूगढ़ी रेलवे स्टेशन के पुल के नीचे पानी जमा होने का मुद्दा भी उठाया गया। किसानों ने कहा कि जलभराव के कारण किसानों और आम लोगों को परेशानी होती है। उन्होंने संबंधित विभाग से पानी की निकासी का उचित प्रबंध जल्द करने की मांग की। बैठक में न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को पूरी तरह लागू करने की मांग भी उठाई गई। बैठक में काफी संख्या में किसान मौजूद थे।

लक्ष्य की प्राप्ति में लगाएं ऊर्जा : डॉ. अर्चना



गोहाना। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. अर्चना गुप्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में सरकार युवाओं को योग्यता और प्रतिभा के आधार पर आगे बढने के अवसर प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। पारदर्शी भर्ती व्यवस्था से युवाओं में यह विश्वास मजबूत हुआ है कि मेहनत और काबिलियत के दम पर वे अपने लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। शनिवार सायं डॉ. गुप्ता ने गोहाना के सेक्टर-7 में पहुंचकर एचसीएस परीक्षा में टॉपर अभिषेक सरोहा और उनके परिजनों से मुलाकात कर बधाई दी। डॉ. गुप्ता ने कहा कि अभिषेक सरोहा की उपलब्धि प्रदेश के उन युवाओं के लिए प्रेरणा है, जो प्रशासनिक सेवाओं में शामिल होकर जनसेवा करना चाहते हैं। इस अवसर पर अभिषेक के पिता जगबीर सरोहा, माता अनीता देवी, भाई विनय सरोहा, भाजपा जिलाध्यक्ष बिजेन्द्र मलिक, पूर्व जिलाध्यक्ष डॉ. धर्मबीर नांदल, समाजसेवी इंद्रजीत विरमानी, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, भूपेंद्र मुदगिल, प्रवीण खुराना, कृष्ण सैनी व नरेन्द्र गहलावत उपस्थित रहे।

चार घंटे हिरासत में रखने के बाद छोड़ा



सोनीपत। दिल्ली जाते समय सोनीपत पुलिस ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को रोककर सिविल लाइन थाना में हिरासत में ले लिया। करीब चार घंटे बाद सभी को रिहा कर दिया गया। सूचना मिलने पर पूर्व सांसद चौधरी धर्मपाल सिंह मलिक और पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार कार्यकर्ताओं के समर्थन में थाने पहुंचे। बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता भी वहां पहुंचे। हिरासत में लिए गए कार्यकर्ताओं में कांग्रेस महासचिव सौरभ सचदेवा, अनुज छाबड़ा, सत्यवीर निर्माण, जिला कांग्रेस कमेटी सोनीपत (शहरी) के सचिव साहिल राणा, हंसराज और सरदार इंदरपाल सिंह शामिल थे। धर्मपाल सिंह मलिक ने कहा कि कांग्रेस कार्यकर्ता लोकतांत्रिक तरीके से जनहित के मुद्दे उठाते रहेंगे। सौरभ सचदेवा ने कहा कि लोकतांत्रिक अधिकारों और जनता की आवाज के लिए उनका संघर्ष जारी रहेगा।

सीटू ने चुनाव आयुक्त का पुतला फूंका



सोनीपत। सीटू हरियाणा के आह्वान पर शनिवार को गोहाना रोड बाईपास फ्लाईओवर के नीचे स्थित शहीद भगत सिंह भवन में प्रदर्शन किया गया। इसमें सीटू, किसान सभा और ज्ञान विज्ञान समिति के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रदर्शनकारियों ने चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का पुतला दहन कर आंदोलनकारियों की गिरफ्तारी और उन पर किए गए लाठीचार्ज की निंदा की। इस दौरान केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए ज्ञानेश कुमार से इस्तीफे की मांग की गई। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि आंदोलनकारियों को गिरफ्तार करना और उन पर लाठीचार्ज करना लोकतांत्रिक अधिकारों के खिलाफ है। उन्होंने ज्ञानेश कुमार इस्तीफा दो, ज्ञानेश कुमार तुम्हें जाना होगा और मोदी की तानाशाही नहीं चलेगी जैसे नारे लगाए। प्रदर्शन में सीटू जिला प्रधान अनीता, जिला सचिव सुनीता, किसान सभा नेता सुखबीर मौजूद रहे।

विवि से संबद्धता के लिए कालेज का निरीक्षण



खरखौदा। सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या कालेज खरखौदा में खानपुर विवि से संबद्धता प्राप्त करने के उद्देश्य से निरीक्षण किया गया। प्राचार्य प्रो. अनिल कुमार के नेतृत्व में निरीक्षण टीम का स्वागत किया । निरीक्षण के दौरान विवि की टीम ने शैक्षणिक व्यवस्थाओं और आधारभूत सुविधाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के लिए खानपुर विवि की ओर से प्रो. जगदीप सिंगला, एसोसिएट प्रो.(अंग्रेजी), डा. नीतिका और एसोसिएट प्रो. डा. मंजू सरोहा पहुंचे। निरीक्षण के दौरान टीम ने कालेज की लाइब्रेरी, कक्षाओं, सेमिनार हाल, बहुउद्देशीय हाल और प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। इसके साथ ही संबंधित दस्तावेजों की जांच कर विभिन्न पाठ्यक्रमों के संचालन से जुड़ी व्यवस्थाओं की जानकारी ली। महाविद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों ने सहयोग किया और निरीक्षण प्रक्रिया को सुचारु रूप से संपन्न करवाने में योगदान दिया।

वॉक में दौड़ीं विवि की 50 छात्राएं



गोहाना। भगत फूल सिंह महिला विवि की छात्र-नेतृत्व वाली स्पेक्ट्रम सोसाइटी द्वारा शनिवार की सुबह छात्राओं को शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं सक्रिय रहने के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 2 किलोमीटर रन एवं वॉक का आयोजन किया गया। तेजस क्लब के तत्वावधान में आयोजित इस गतिविधि में लगभग 50 छात्राओं ने भाग लिया। कुलपति प्रो. सुदेश ने इस प्रयास की सराहना की। शारीरिक शिक्षा विभाग की अध्यक्ष डॉ. बबीता ने कहा कि नियमित शारीरिक गतिविधियां स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, शारीरिक क्षमता बढ़ाने तथा मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। छात्राओं को अपनी दिनचर्या में दौडने एवं पैदल चलने जैसी गतिविधियों को शामिल करने के लिए प्रेरित किया। आयोजन टीम में अध्यक्ष रितिका टोकस, उपाध्यक्ष झांसी जाखड़, सचिव सारा त्यागी तथा कोषाध्यक्ष प्रेरणा ने अपना सहयोग दिया।

विधायक कादियान ने रक्तदान कर बढ़ाया युवाओं का हौसला

- प्रयास स्कूल में जुटा 90 यूनिट रक्त : विधायक ने बांटे प्रशस्ति पत्र

हरिभूमि न्यूज ⏭ गन्नौर

सिटी क्लब ऑफ गन्नौर और प्रयास स्कूल के संयुक्त तत्वाधान में शनिवार को स्कूल में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का शुभारंभ मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक देवेंद्र कादियान ने रिबन काटकर किया। विधायक के स्कूल पहुंचने पर एमडी अमित बत्रा और प्रिंसिपल सुरेंद्र छाबड़ा ने बुके भेंट कर उनका स्वागत किया। शिविर में विधायक कादियान ने खुद आगे आकर रक्तदान किया और वहां मौजूद युवाओं को इस पुनीत कार्य के लिए प्रेरित किया। शिविर में करीब 90 यूनिट रक्त एकत्रित किया। रक्तदान करने आए युवाओं में उत्साह देखने को मिला। रक्तदाताओं ने जरूरतमंदों की जिंदगी बचाने का संकल्प लिया। विधायक कादियान ने रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया और कहा कि रक्तदान महादान है। पार्षद दिनेश अदलखा, शमशेर सैनी, अजय सरोहा, विकास शर्मा, अंकित मल्होत्रा, नीरज जाग्या, प्रवेश मदान, योगेश, हरीश मदान, रजत हांडा, तरुण चुद्य आदि मौजूद रहे।



गन्नौर। शिविर में विधायक देवेंद्र कादियान रक्तदान करते हुए।

कांग्रेस शहरी जिलाध्यक्ष कमल दीवान की अध्यक्षता में हुआ कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

एक निजी यूनिवर्सिटी के कई प्रमुख छात्रों व युवा साथियों ने कांग्रेस की नीतियों और विचारधारा में आस्था जताते हुए कांग्रेस व एनएसयूआई का दामन थाम लिया। आयोजन कांग्रेस के शहरी जिलाध्यक्ष कमल दिवान की अध्यक्षता में किया, जहां सभी नवागंतुक युवाओं का पार्टी का पटका पहनाकर औपचारिक स्वागत किया। एनएसयूआई हरियाणा के प्रदेश महासचिव व प्रभारी भारत नांदल, जिलाध्यक्ष नितिन तुषीर तथा नेत्री पायल मलिक विशेष रूप से मौजूद रहे। युवा नेताओं ने कहा कि देश और प्रदेश का युवा मौजूदा समय में बदलाव चाहता है और कांग्रेस की छात्र-हितैषी नीतियों से प्रभावित होकर लगातार संगठन से जुड़ रहा है। विवि से जुड़े अंशुल धनखड़ के साथ आयुष दहिया, कुणाल राठी, लोकेश ढोंचक, तुषार अंतिल, हर्ष कादयान, रितेश दहिया, कृष त्यागी, आदित्य धीमान, लक्ष्य,गौरव धनखड़ और जतिन ने औपचारिक रूप से कांग्रेस व एनएसयूआई की सदस्यता ग्रहण की।

युवाओं ने थामा कांग्रेस व एनएसयूआई का दामन

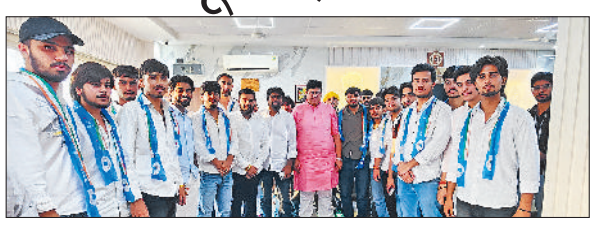

पार्टी में आस्था जताने वाले छात्रों के साथ कांग्रेस शहरी जिलाध्यक्ष कमल दिवान साथ में अन्य।

संगठन में मिलेगा पूरा मान-सम्मान : कमल दिवान

शहरी जिलाध्यक्ष कमल दिवान ने नवागंतुक युवाओं का स्वागत करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी हमेशा से युवाओं और छात्रों की आवाज रही है। पार्टी में शामिल हुए प्रत्येक साथी को पूरा मान-सम्मान दिया जाएगा। युवाओं की यह नई टीम जिले के शिक्षण संस्थानों में छात्रों के अधिकारों की लड़ाई को मजबूती देगी। इस मौके पर वरिष्ठ नेता रमन चड्ढा, रोहित मलिक और कार्यालय प्रभारी जयवीर राठी सहित कई अन्य कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बंद मकान से लाखों की नकदी और आभूषण निकाले



सोनीपत। गढ़ी ब्राह्मणान में चोरों ने दिनदहाड़े बंद मकान को निशाना बनाकर 7.50 लाख की नकदी और करीब 20 तोले सोने के आभूषण चोरी कर लिए। वारदात के समय परिवार के सदस्य बाजार गए हुए थे। वापस लौटने पर मकान का मुख्य दरवाजा खुला मिला व अंदर सामान बिखरा पड़ा था। अलमारी की जांच करने पर नकदी और जेवरात गायब मिले। पीड़ित ने अपने दोनों बेटों की शादी के लिए आभूषण और नकदी जुटाकर रखी थी। शिकायत पर सिटी थाना की ओल्ड चौकी पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गढ़ी ब्राह्मणान निवासी विक्रम सिंह दिल्ली परिवहन निगम में चालक हैं।

मंगलम सारथी फाउंडेशन ने मनाया छठा स्थापना दिवस

- विधायक निखिल मदान ने बच्चों को 10 कंप्यूटर उपलब्ध करवाने का दिया आश्वासन, होनहार बच्चों को साइकिल भेंट की

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

गांव फाजिलपुर में कार्यरत मंगलम सारथी फाउंडेशन का छठा स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया । कार्यक्रम का शुभारंभ विधायक निखिल मदान, महापौर राजीव जैन और डॉ. सुमन मंजरी ने दीप प्रज्वलित करके किया। बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से प्रतिभा दिखाई। विधायक निखिल मदान ने कहा कि बच्चों को शिक्षा के साथ तकनीकी रूप से सक्षम बनाना भी जरूरी है। उन्होंने बच्चों के लिए 10 कंप्यूटर उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया। महापौर राजीव जैन ने शिक्षा, सेवा और रोजगार के विचार को बेहतर तरीके से लागू करने के लिए संस्था के संचालकों और सदस्यों को प्रोत्साहित किया। डॉ. सुमन मंजरी ने बच्चों को संस्कारों की जड़ें मजबूत रखने और शहर के संसाधनों का बेहतर उपयोग करने का संदेश दिया। अतिथियों ने संस्कार केंद्र के बच्चों को सर्वाधिक उपस्थिति और अनुशासन पुरस्कार प्रदान किए। सिलाई सीख चुकी महिलाओं को प्रमाण पत्र दिए गए। पर्यावरण प्रेमी अरुण मलिक ने दो होनहार बच्चों को साइकिल भेंट की। मंच संचालन मीनाक्षी ने किया। संस्था मार्गदर्शक योगेश दीक्षित ने आभार जताया। वेद सिंह सैनी, बीबी अरोड़ा, गोविंद राम सिंघल, एसके परूथी, प्रवीण वर्मा, रामकिशन बत्रा, डॉ. कृष्ण तेहलान, विपिन कुमार, अविनाश सेठी, लक्ष्मी, देवेंद्र सूरा, देवेंद्र जून आदि मौजूद थे।



सोनीपत। मंगलम सारथी फाउंडेशन के कार्यक्रम में विधायक, मेयर एवं अन्य बच्चों को सम्मानित करते हुए।

फसल अवशेषों से प्रोटीन बनाने में जुटे दो विद्यार्थी



सोनीपत। कृषि अवशेषों को उपयोगी प्रोटीन में बदलकर खाद्य क्षेत्र में टिकाऊ विकल्प विकसित करने की दिशा में सोनीपत के दो छात्र नितीश कुमार और गुलशन कुमार काम कर रहे हैं। हरियाणा स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फूड टेक्नोलॉजी एंटरप्रेन्योरशिप एंड मैनेजमेंट (निफ्टेम-के) के इन छात्रों ने किन्वा बायो नाम से अपनी पहल शुरू की है। उनकी टीम को सैमसंग सॉल्व फॉर टुमॉरो 2026 की शीर्ष 20 टीमों में जगह मिली है।

शरद पूर्णिमा पर होगा औषधीय खीर का वितरण

20 अक्टूबर तक श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर में करवाना होगा पंजीकरण, बिना पंजीकरण नहीं मिलेगी खीर

सोनीपत। ककरोई चौक स्थित श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर एवं प्याऊ में शरद पूर्णिमा के अवसर पर 26 अक्टूबर को निःशुल्क औषधीय खीर का वितरण किया जाएगा। मंदिर समिति के प्रधान संजय सिंगला ने बताया कि मंदिर में पिछले 17 वर्षों से श्री सालासर हनुमान की अखंड ज्योत प्रज्वलित है। परंपरा के अनुसार औषधियों से तैयार खीर को चंद्रमा की रोशनी में रातभर रखा जाता है। खीर का वितरण 26 अक्टूबर 2026 को सुबह 7:30 बजे होगा। इसके लिए 20 अक्टूबर तक मंदिर में पंजीकरण करवाना अनिवार्य है। पंजीकरण सुबह 6 से 11 बजे और शाम 4 से रात 9 बजे तक मंदिर में स्वयं पहुंचकर करवाया जा सकता है। फोन पर पंजीकरण की सुविधा नहीं है। बिना पंजीकरण खीर नहीं मिलेगी। व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रति व्यक्ति एक कटोरी खीर दी जाएगी। संजय सिंगला ने श्रद्धालुओं से समय रहते पंजीकरण करवाने की अपील की। उन्होंने स्पष्ट किया कि खीर को किसी बीमारी का प्रमाणित उपचार न मानें और जरूरत पड़ने पर चिकित्सक की सलाह लें।

आर्य समाज ने अच्छे संस्कार दिए : मेयर



सोनीपत। आर्य समाज ने अपने स्थापत्य काल से ही देशभक्ति, मानव निर्माण और परमात्मा की पूजा करने की राह दिखाई। यही वो संगठन है जिसने हमें अच्छे संस्कार दिए हैं। ये विचार नगर निगम के मेयर राजीव जैन ने व्यक्त किए। वे शनिवार को शहर की काठ मंडी स्थित आर्य समाज द्वारा संचालित आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में वार्षिकोत्सव में बोल रहे थे। कार्यक्रम का उद्घाटन समाजसेवी पंकज गुप्ता, प्रदीप दहिया व प्रविन्द्र फौजी ने किया। राजीव जैन ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने वेदों पर जमी धूल को साफ किया जिससे हम अंधकार के गहरे गर्त में जाने से बच सके। इस उपकार के लिए देश स्वामी दयानंद का सदा ऋणी रहेगा। पंकज गुप्ता ने कहा कि महर्षि दयानंद के अधूरे काम को स्वामी श्रद्धानंद ने आगे बढाया। सही अर्थों में उन्होंने सनातन धर्म को बचाने का काम किया था।

वार्ड-12 में विकास कार्यों का शुभारंभ

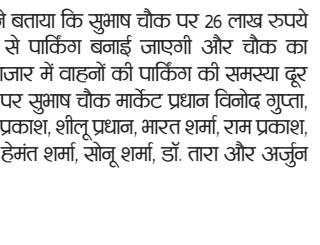

सोनीपत। विधायक निखिल मदान और महापौर राजीव जैन ने वार्ड-12 में 1 करोड़ 5 लाख रुपये की लागत से होने वाले विभिन्न विकास कार्यों का शुभारंभ किया। इनमें सुभाष चौक पर पार्किंग निर्माण, गलियों को पक्का करने और क्षेत्र की आधारभूत सुविधाओं को बेहतर बनाने के कार्य शामिल हैं। विधायक निखिल मदान ने बताया कि सुभाष चौक पर 26 लाख रुपये की लागत से अंतरलॉकिंग टाइलों से पार्किंग बनाई जाएगी और चौक का सौंदर्यीकरण किया जाएगा। इससे बाजार में वाहनों की पार्किंग की समस्या दूर करने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर सुभाष चौक मार्केट प्रधान विनोद गुप्ता, शशिपाल अरोड़ा, सन्नी चोपड़ा, ओम प्रकाश, शीलू प्रधान, भारत शर्मा, राम प्रकाश, राजू, धर्म सिंह कुंडु, कृष्ण चंद शर्मा, हेमंत शर्मा, सोनू शर्मा, डॉ. तारा और अर्जुन देव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

राष्ट्रीय नेटबॉल चैंपियनशिप के लिए आज होगा प्रदेश की टीमों का चयन, खिलाड़ी इंदौर-भिवानी में दिखाएंगे हुनर

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

राष्ट्रीय नेटबॉल प्रतियोगिताओं व वर्ष 2027 में होने वाले राष्ट्रीय खेलों के लिए हरियाणा प्रदेश की पुरुष व महिला वर्ग की टीमों के गठन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। हरियाणा नेटबॉल एसोसिएशन ने खिलाड़ियों के प्रारंभिक चयन के लिए 11 अक्तूबर को राई स्थित हरियाणा खेल विश्वविद्यालय में ट्रायल का आयोजन करने का निर्णय लिया है। ट्रायल का समय सुबह 11 से शाम 5 बजे तक रहेगा। इसमें प्रदर्शन के आधार पर चयनित खिलाड़ियों को 14 अक्तूबर से 3 नवंबर तक आयोजित होने वाले प्रथम चयन ट्रायल एवं प्रशिक्षण शिविर में शामिल होने का अवसर मिलेगा। एसोसिएशन की महासचिव बबीता दहिया ने बताया कि सत्र 2026-27 में कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। इनमें सीनियर राष्ट्रीय मिश्रित नेटबॉल चैंपियनशिप और महिला वर्ग की सीनियर राष्ट्रीय नेटबॉल चैंपियनशिप शामिल हैं। इन प्रतियोगिताओं के लिए प्रदेश की टीमों को तैयार करने के उद्देश्य से चयन प्रक्रिया आयोजित की जा रही है। ट्रायल एवं प्रशिक्षण शिविर में केवल वहीं खिलाड़ी भाग लेने योग्य होंगे, जो नेटबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया (एनएफआई) के सत्र 2026-27 के लिए पूरी तरह पंजीकृत हैं। इच्छुक खिलाड़ी ट्रायल से संबंधित जानकारी के लिए महिला वर्ग की खिलाड़ी रेनू रानी और पुरुष वर्ग के खिलाड़ी सुमित से संपर्क कर सकते हैं।

नेटबॉल की होंगी तीन प्रतियोगिताएं

बबीता दहिया ने बताया कि तीसरी सीनियर राष्ट्रीय मिश्रित नेटबॉल चैंपियनशिप का आयोजन 3 से 6 दिसंबर तक मध्यप्रदेश के इंदौर स्थित मधुबन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन में होगा। इसके अलावा 44वीं सीनियर राष्ट्रीय नेटबॉल चैंपियनशिप के महिला वर्ग के मुकाबले 24 से 27 दिसंबर तक हरियाणा के भिवानी के कलिंगा स्थित श्रीबालाजी सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित किए जाएंगे। इसके बाद वर्ष 2027 में मेघालय में होने वाले 39वें राष्ट्रीय खेलों में नेटबॉल की तीन प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया है। इनमें ट्रेडिशनल नेटबॉल, फास्ट-5 नेटबॉल और मिक्स्ड नेटबॉल शामिल हैं। इन प्रतियोगिताओं के लिए हरियाणा की टीमों की तैयारी व खिलाड़ियों के चयन पर ध्यान रखा जा रहा है। चयन प्रक्रिया एवं प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अवसर मिलने के साथ हरियाणा की टीमें राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रदेश का नाम रोशन कर सकेंगी।

- सोनीपत के राई स्थित हरियाणा खेल विश्वविद्यालय में सुबह 11 से शाम 5 बजे तक होंगे ट्रायल, एनएफआई में पंजीकृत खिलाड़ी ही ले सकेंगे भाग
- एसो . के अनुसार 14 अक्तूबर से 3 नवंबर तक होंगे प्रथम चयन ट्रायल एवं प्रशिक्षण शिविर
- राष्ट्रीय नेटबॉल चैंपियनशिप का इंदौर व भिवानी में होगा आयोजन, वर्ष 2027 के राष्ट्रीय खेलों में भी शामिल होगी नेटबॉल स्पर्धा

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9653530209, 9253681005, 9253681010

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 11 अक्टूबर 2026

संस्कृति-आस्था का उल्लास
नवरात्रों के बहुरंगी उत्सव


बंगाल की पारंपरिक दुर्गा पूजा


गुजरात में नवरात्र का महत्वपूर्ण अंग-डांडिया


ओडिशा के कटक में 'चांदी मेधा' से सजी मां दुर्गा की प्रतिमा


उत्तर भारत में नवरात्र के दौरान होता है रामलीला का आयोजन

शारदीय नवरात्र विशेष

भारत के विभिन्न स्थानों में नवरात्र मनाने के अलग-अलग तरीके हैं। ये इस बात के प्रमाण हैं कि हमारी संस्कृति कितनी समृद्ध और विविधतापूर्ण है। बंगाल की कलात्मकता, गुजरात का नृत्य, दक्षिण का गोलू और मैसूर का राजसी वैभव, सब मिलकर एक ही सनातन शक्ति की आराधना करते हैं। यह विविधता ही हमारे देश की असली पहचान और सुंदरता है। आइए भारत के विभिन्न राज्यों में नवरात्रों और दुर्गा पूजा के अनूठे और मनमोहक स्वरूपों पर एक नजर डालते हैं।

आवरण कथा
शिखर चंद जैन

विविधता में एकता का महापर्व नवरात्रों में होने वाली दुर्गा पूजा, भारत के सबसे बड़े और उल्लासपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह केवल मां शक्ति की आराधना का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक, सामाजिक समरसता और उल्लास का भी जीवंत अवसर है। यद्यपि इस उत्सव का मूल भाव महिषासुर मर्दिनी मां दुर्गा की आसुरी शक्तियों पर विजय का उत्सव मनाना है, लेकिन देश के अलग-अलग राज्यों में इसे मनाने की शैलियां, परंपराएं और सांस्कृतिक रंग पूरी तरह भिन्न हैं।

बंगाल में दिखता है परंपरा-संस्कृति का संगम

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा का रूप सबसे अधिक व्यापक, भव्य और पारंपरिक होता है। यहां यह उत्सव केवल पांच दिनों का नहीं, बल्कि पूरे साल की तैयारी का परिणाम होता है। पारंपरिक बंगाली घरों और पुराने अभिजात्य परिवारों (राजबाड़ी की पूजा) में आज भी मां दुर्गा की 'एकचाला' (एक ही अर्द्धवृत्त फ्रेम में सभी देवताओं की मूर्तियां) प्रतिमा स्थापित की जाती है। कोलकाता और अन्य शहरों में समकालीन कला, सामाजिक संदेशों या प्राचीन मंदिरों की प्रतिकृतियों पर आधारित विशाल पंडाल बनाए जाते हैं, जिन्हें देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। महाष्टमी के दिन नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं को मां दुर्गा का स्वरूप मानकर उनकी विशेष पूजा की जाती है, जो नारी शक्ति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। धुनुची (धूप और नारियल के छिलकों से सुलगता पात्र) के साथ किया जाने वाला ऊर्जावान धुनुची नृत्य यहां का मुख्य आकर्षण है। वहीं, विजया दशमी के दिन विवाहित महिलाएं मां को सिंदूर अर्पित करने के बाद आपस में सिंदूर लगाकर सुखद भविष्य की कामना करती हैं।


महाराष्ट्र में नवरात्र के दौरान 'भोंडाला' खेलती महिलाएं

ओडिशा-असम में शक्तिपीठों की आराधना

पूर्वी भारत के राज्यों ओडिशा और असम में दुर्गा पूजा का अपना ही विशिष्ट और प्राचीन स्वरूप देखने को मिलता है। ओडिशा के कटक शहर में दुर्गा पूजा के दौरान मां की मूर्तियों के पीछे शुद्ध चांदी के कलात्मक मुकुट और झांकियां बनाई जाती हैं, जिन्हें 'चांदी मेधा' कहा जाता है। यहां का विसर्जन जुलूस अपनी भव्यता और संगीत आयोजन के लिए प्रसिद्ध है। जबकि असम में कामाख्या मंदिर और शक्तिपीठों के प्रभाव के कारण यहां मां दुर्गा की पूजा तांत्रिक और पारंपरिक विधि-विधान से की जाती है। यहां 'अंजली' और 'महाप्रसाद' वितरण का विशेष महत्व होता है।

गुजरात में होता है आयोजित गरबा-डांडिया का महाउत्सव

गुजरात में नवरात्रों में मां अंबा और मां दुर्गा की आराधना नृत्य और संगीत के माध्यम से की जाती है। नवरात्रों में युवक-युवतियां पारंपरिक परिधानों में सजकर मां की ज्योत (गरबी) के चारों ओर तालियों और लोकगीतों के साथ गरबा और डांडिया खेलते हैं। यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप का सबसे बड़ा मंच बन जाता है, जहां युवा से लेकर बुजुर्ग तक पूरी ऊर्जा के साथ शामिल होते हैं।

महाराष्ट्र में होती है घटस्थापना और शस्त्र पूजा

महाराष्ट्र में नवरात्र और विजया दशमी का पर्व लोकमान्य तिलक द्वारा पुनर्जीवित सार्वजनिक गणेशोत्सव की तरह ही सामाजिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है। अश्विन प्रतिपदा के दिन घरों में कलश स्थापना (घटस्थापना) और नौ दिनों तक अखंड दीप प्रज्वलित करने की परंपरा है। महाराष्ट्र में महिलाओं और विशेषकर युवतियों के लिए 'भोंडला' या 'हदस्तोत्सव' खेलने की अनूठी परंपरा है, जिसमें हाथी के चारों ओर घेरा बनाकर लोकगीत गाए जाते हैं। विजया दशमी के दिन यहां शमी के पत्तों (जिसे स्वर्ण माना जाता है) को एक-दूसरे को देकर शुभकामनाएं दी जाती हैं। इस अवसर पर औजारों तथा हथियारों की पूजा भी की जाती है।

दक्षिण भारत की शान है बोम्माइ गोलू और शाही दशहरा

दक्षिण भारत (विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश) में दुर्गा पूजा का स्वरूप कला और शाही इतिहास से जुड़ा हुआ है। तमिलनाडु और कर्नाटक में नवरात्र के दौरान घरों में सीढ़ीनुमा रैक बनाकर देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं और जीवन से जुड़ी गुड़ियों (बोम्माइ) को सजाया जाता है। इसे 'गोलू' कहा जाता है' जहां महिलाएं एक-दूसरे के घर जाकर हल्दी-कुमकुम और उपहार का आदान-प्रदान करती हैं। मैसूर पैलेस में मनाया जाने वाला दशहरा पूरी दुनिया में मशहूर है। यहां विजया दशमी के दिन सजे-धजे हाथियों की सवारी निकाली जाती है, जिसमें मां चामुंडेश्वरी की स्वर्ण प्रतिमा को हाथी पर विराजमान कर भव्य जुलूस निकाला जाता है।


दक्षिण भारत में नवरात्र के दौरान बोम्माइ गोलू की सजावट

उत्तर भारत में रामलीलाओं की धूम

उत्तरी भारत में नवरात्रों का समापन रावण दहन और रामलीला के साथ विजया दशमी के रूप में मुख्य रूप से होता है। विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश में इस दौरान जगह-जगह रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही इस परंपरा का क्रेज आज भी है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू घाटी में मनाया जाने वाला दशहरा उत्सव बेहद अनूठा है। यहां सात दिनों तक स्थानीय देवी-देवताओं की पालकियों की भव्य रथ यात्रा निकलती है। यह उत्सव तब शुरू होता है, जब देश के बाकी हिस्सों में दशहरा समाप्त हो जाता है। यहां मां दुर्गा के साथ भगवान रघुनाथ की पूजा का मुख्य विधान है। *

सृष्टि का मूल आधार है 'शक्ति'। शक्ति की यह आराधना केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता जितनी ही प्राचीन और वैश्विक है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक मातृ शक्ति को नाम-तरीकों से पूजा जाता रहा है।

दुनिया भर में शक्ति पूजा
स्वरूप-मान्यताएं हैं अलग-अलग

आस्था / अंजू जैन



भारतीय उपमहाद्वीप को शक्ति पूजा का वैश्विक उद्गम केंद्र माना जा सकता है। यहां 'शाक्त संप्रदाय' के अंतर्गत शक्ति को ही सर्वोच्च सत्ता के रूप में पूजा जाता है। भारत में मां दुर्गा, काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रूपों में शक्ति का त्रिविध स्वरूप आकर्षण, ऐश्वर्य और ज्ञान पूजनीय है। वर्ष में दो बार आने वाले 'नवरात्रि' के पावन अवसर पर नौ दिनों तक आदिशक्ति के नौ अलग-अलग रूपों (शैलपुत्री से लेकर सिद्धिदात्री तक) की पूजा की जाती है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, तिब्बत और श्रीलंका में फैले 51 शक्तिपीठ शक्ति पूजा के भौगोलिक और आध्यात्मिक विस्तार का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। शक्ति पूजा की व्यापकता पूरी दुनिया में प्राचीन काल से आज भी विद्यमान है।

प्राचीन मिस्र में 'आइसिस' और 'सेखमेट' की आराधना: यदि हम प्राचीन वैश्विक सभ्यताओं की ओर रुख करें, तो नील नदी की घाटी (मिस्र) में


मिस्र सभ्यता की देवी 'आइसिस'

शक्ति पूजा का एक बेहद समृद्ध इतिहास मिलता है। मिस्र की सभ्यता में देवी 'आइसिस' को मातृत्व, जादू और जीवन के पुनर्जन्म की परम देवी माना जाता था, जिसकी तुलना भारतीय संस्कृति की मां पार्वती से की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, युद्ध और विनाश की उग्र देवी 'सेखमेट' का स्वरूप भारतीय परंपरा की मां काली से हूबहू मेल खाता है। सिंह के मुख वाली देवी सेखमेट को न्याय और संहार की शक्ति माना जाता था, जो बुरी ताकतों से ब्रह्मांड की रक्षा करती थीं।

ग्रीक (यूनानी) सभ्यता में देवियों का महातम्य: यूनान के प्राचीन दर्शन और पौराणिक कथाओं में भी स्त्री शक्ति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ग्रीक पौराणिक कथाओं में देवी 'अथेना' को बुद्धि, ज्ञान और युद्ध की रणनीति की देवी माना गया है, जो मां सरस्वती और मां दुर्गा के मिले-जुले स्वरूप को दर्शाती हैं। इसी प्रकार, प्रकृति, जंगली जीवों और प्रसव की देवी 'आर्टेमिस' और पृथ्वी माता के रूप में पूजी जाने वाली देवी 'डेमेटर' (जिन्हें हम मां शाकंभरी या अन्नपूर्णा कह सकते हैं) की पूजा यूनानी समाज में अनिवार्य रूप से की जाती थी। ओलंपिक खेलों की शुरुआत भी कहीं न कहीं इन शक्तियों के सम्मान से जुड़ी थी।

मेसोपोटामिया सभ्यता में प्रेम-युद्ध की देवी इश्तार: दजला और फरात नदियों के किनारे विकसित हुई मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक और सीरिया) की प्राचीन सुमेरियन और बेबीलोनियन सभ्यताओं में देवी 'इन्नाना' या 'इश्तार' की पूजा का व्यापक प्रचलन था। इश्तार को प्रेम, सौंदर्य, उर्वरता के साथ-साथ युद्ध की भी देवी माना जाता था। शेर की सवारी करने वाली देवी इश्तार का यह हिंसक और ममतामयी दोहरा स्वरूप बिल्कुल भारतीय सिंहवाहिनी मां दुर्गा जैसा ही है। यह इस बात का ऐतिहासिक साक्ष्य है कि मानव सभ्यता के शुरुआती दौर में भी शक्ति को एक योद्धा और रक्षक के रूप में ही देखा गया।

चीन-जापान में गुआन यिन और अमातेरासु: पूर्वी एशिया की बौद्ध और शिंतो परंपराओं में भी शक्ति पूजा ने अपना स्वरूप बदला लेकिन अपनी मूल भावना को बनाए रखा। चीन में 'गुआन यिन' को करुणा, दया और मातृत्व की देवी के रूप में पूजा जाता है। यद्यपि वे बौद्ध परंपरा से जुड़ी हैं, लेकिन आम जनमानस में उनका स्थान एक रक्षक माता का ही है। वहीं जापान की पारंपरिक शिंतो संस्कृति में


चीन में बौद्ध परंपरा की देवी गुआन यिन

'अमातेरासु' को सूर्य की देवी और संपूर्ण ब्रह्मांड की निर्मात्री माना गया है। जापानी शाही राजवंश स्वयं को सूर्य देवी अमातेरासु का वंशज मानता है, जो यह साबित करता है कि वहां राजसत्ता की शक्ति का स्रोत भी एक महिला देवी ही हैं।

अमेरिका में माया और एज्टेक की प्रकृति पूजा: कोलंबस के अमेरिका पहुंचने से बहुत पहले, वहां की समृद्ध माया और एज्टेक सभ्यताओं में प्रकृति को ही शक्ति का जीवंत रूप मानकर पूजा जाता था। एज्टेक सभ्यता में 'कोटलीक्यू' को जीवन और मृत्यु की देवी, यानी 'धरती माता' के रूप में पूजा जाता था। उनका स्वरूप भी स्कंदमाता और काली के समान उग्र और सृजनात्मक था। वहीं माया सभ्यता में 'इशचेल' को चंद्रमा, चिकित्सा और बुनाई की देवी माना जाता था। इन संस्कृतियों में फसल कटाई के समय मातृ शक्ति को धन्यवाद देने के लिए बड़े उत्सव मनाए जाते थे, जो हमारे यहां की 'नवान्न' या 'लोहड़ी', 'पोंगल' परंपरा जैसी ही है। *

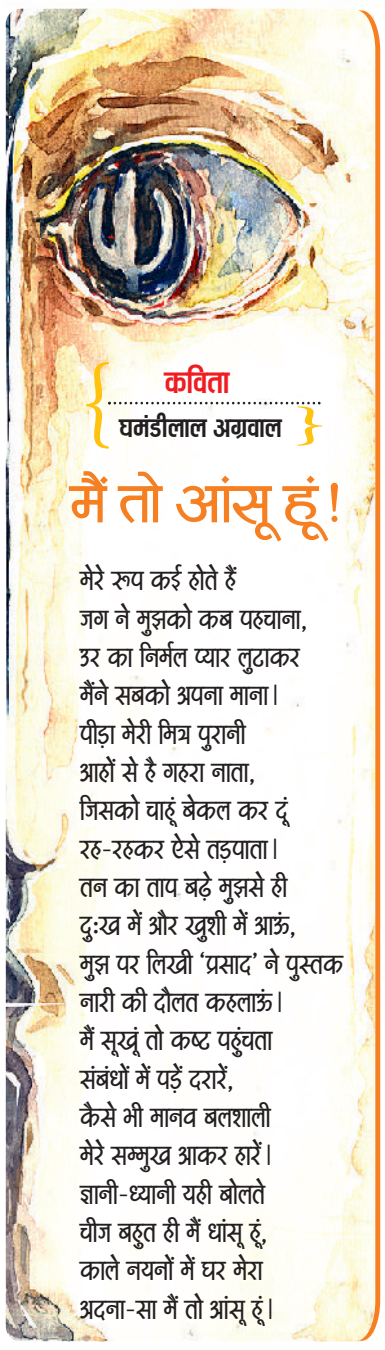

कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मैं तो आंसू हूं!

मेरे रूप कई होते हैं
जग ने मुझको कब पहचाना,
उर का निर्मल प्यार लुटाकर
मैंने सबको अपना माना।
पीड़ा मेरी मित्र पुरानी
आहों से है गहरा नाता,
जिसको चाहूं बेकल कर दूं
रह-रहकर ऐसे तड़पाता।
तन का ताप बढ़े मुझसे ही
दुःख में और खुशी में आऊं,
मुझ पर लिखी 'प्रसाद' ने पुस्तक
नारी की दौलत कहलाऊं।
मैं सूखूं तो कष्ट पहुंचता
संबंधों में पड़ें दरारें,
कैसे भी मानव बलशाली
मेरे सम्मुख आकर हारें।
ज्ञानी-ध्यानी यही बोलते
चीज बहुत ही मैं धांसू हूं,
काले नयनों में घर मेरा
अदना-सा मैं तो आंसू हूं।

व्यंग्य / डॉ. यशोधरा भटनागर

दोस्ती का डेटा पैक



हम बड़े भाग्यशाली समय में जी रहे हैं, जब हमारे पास दोस्तों की कोई कमी नहीं हैं। हमारे इतने दोस्त हैं कि हम खुद भूल जाते हैं कि आखिर हम किसके दोस्त हैं और कौन हमारा? भाग्यशाली समय की हर सुबह अपने दोस्तों से मिलने के साथ शुरुआत होती है और वो भी घर बैठे। मोबाइल उठाया अंगुली से स्क्रीन पर हल्का-सा स्पर्श किया, दोस्ती की दुनिया खुल जाती है। हजारों दोस्त एक साथ कतार में खड़े मिलते हैं। अब पुराने जमाने की तरह चाय पिलाने, हाल-चाल पूछने, या दुःख-सुख बांटने की कोई झंझट नहीं। यहां सब काम लाइक और इमोजी से चल जाता है।

पहले दोस्ती का मतलब था, आप बीमार पड़ें तो कोई दवा ला दे। अब दोस्ती का मतलब है, आप बीमार पड़ें तो सौ लोग लिख दें 'गेट वेल सून।' लिखने वाला इस परम विश्वास से संदेश भेजता है कि यह वाक्य दवा और दुआ से भी ज्यादा प्रभावी तरीके से काम करेगा। लिखने वाले भी निश्चिंत हो जाते हैं कि उसने दोस्ती का फर्ज अदा किया। मोबाइल में इतने 'गेट वेल' बरसते हैं कि बीमारी भी ठिठककर सोचती है। यहां दर्द असली है, या महज रस्म अदायगी है?

अब यह नई संवेदना है, जिसमें आदमी घर से नहीं निकलता, पर भावनाएं पूरी तरह आउटसोर्स कर देता है। भावनाएं डाक से नहीं, डेटा से जाती हैं और कभी-कभी 'डिलीवर' भी नहीं होतीं। इतनी फर्ज अदायगी के बाद अगर मरीज स्वस्थ हो जाए तो ठीक, नहीं तो अगली पोस्ट 'ओम शांति' की तैयारी है। सोशल मीडिया ने दोस्ती को बहुत लोकतांत्रिक बना दिया है। अब आप किसी को जानते हों या न जानते हों, दोस्ती हो सकती है। मेरे एक परिचित हैं, जो हर सुबह कई सौ लोगों को 'गुड मॉर्निंग' भेजते हैं। मैंने पूछा, 'भैया क्या आप इन सबको जानते हैं?' वे बोले, 'नहीं, पर ये सब मेरे फ्रेंड्स हैं।' मैंने सोचा, अगर यही दोस्ती है तो मोहल्ले का किराना दुकानदार मेरा आत्मीय मित्र हुआ। कम से कम वह हर महीने उधार का हिसाब पूछते समय मेरा चेहरा तो पहचान लेता है। इन ऑनलाइन दोस्तों की तरह सिर्फ डी.पी. वाला चेहरा ही नहीं पहचानता। अब आदमी के जीवन में दोस्ती का नए पैमाने, नए मापदंड बन गए हैं-लाइक्स। जिसकी पोस्ट पर ज्यादा लाइक, वह ज्यादा लोकप्रिय। लोग फोटो डालते हैं। कभी कॉफी के कप के साथ, कभी जिम में पसीना बहाते हुए, कभी पहाड़ों में मुस्कुराते हुए और नीचे सैकड़ों लोग लिख देते हैं। 'वाह!' या फिर 'कमाल है!'

हमें तो कभी-कभी लगता है कि अगर न्यूटन आज होते तो वे गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत नहीं खोजते, बल्कि यह खोजते कि पोस्ट पर लाइक किस तरह और किस गति से गिरते हैं? ऑनलाइन दोस्ती की एक और खूबी है। यहां हर आदमी बहुत खुश दिखाई देता है। कोई लिख रहा है, 'लाइफ इज ब्यूटीफुल।' कोई लिख रहा है, 'फीलिंग ब्लेस्ड।' जबकि उसी आदमी की असली जिंदगी में बिजली का बिल, बच्चों की फीस और बॉस की डांट उसकी प्रतीक्षा कर रही होती है। पर इन सब चिंताओं के बीच फुर्सत पाते ही वह एक नई फोटो डाल देता है, मानो हर समस्या हल हो गई। एक दिन हमने अपने मोहल्ले के गुड्डू से यूं ही पूछ लिया, 'भैया तुम्हारे कितने दोस्त हैं?'

'पूरे चार हजार आठ सौ। पांच हजार में दो सौ कम।' उसने बड़े गर्व के साथ मुस्कुराते हुए जवाब दिया। हमने कहा, 'अच्छा है, फिर तो तुम्हें कभी अकेलापन नहीं लगता होगा।''नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं। अकेलापन अपनी जगह है। रात को मोबाइल बंद होता है, तो दोस्ती भी 'स्लीप मोड' में चली जाती है। छत की ओर एकटक देखते हुए सोचता हूं, 'इतने सारे दोस्त हैं, पर बात किससे करूं?' उसकी बात सुनकर हम सोचने लगे। इतने दोस्तों के होते हुए भी अकेलापन?' क्योंकि दोस्ती में अब मेहनत नहीं है। मित्रों, दोस्ती का नया ज्ञान और विज्ञान यह है कि डिजिटल की दोस्ती भी बड़ी प्रगतिशील हो गई है। न इंतजार है, न रूठना है, न मनाना है। बस अंगूठा चलाना है। और दोस्त पसंद न आए तो ब्लॉक कर अंगूठा दिखाना है। संवेदनाएं शब्दों की मोहताज हो गईं हैं और भावनाओं ने इमोजी की शक्ल अख्तियार कर ली है। *

लघुकथा / सूर्यदीप कुशवाहा

कच्ची दीवार

अनन्या एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत थी। उसकी कार्यक्षमता, अनुशासन और टीम के नेतृत्व करने की काबिलियत का हर कोई कायल था। इस वर्ष ऑपरेशंस हेड का पद खाली होने वाला था और अनन्या अपनी योग्यता के आधार पर इसकी सबसे प्रबल दावेदार थी। उसी विभाग में राहुल भी मैनेजर था। राहुल काम में औसत था, लेकिन उसकी नेटवर्किंग और ऑफिस के पुरुष सहयोगियों के साथ शाम की पार्टियों में उपस्थिति उसे मैनेजमेंट की नजरों में बनाए रखती थी।

पदोन्नति के इंटरव्यू का दिन आया। अनन्या ने पिछले तीन वर्षों के अपने शानदार रिकॉर्ड, कंपनी के बढ़ते हुए प्रॉफिट और टीम की सफलता का पूरा डेटा प्रस्तुत किया। दूसरी ओर, राहुल का प्रस्तुतीकरण सामान्य था। इंटरव्यू बोर्ड के मुख्य सदस्य मिस्टर खन्ना ने अनन्या से एक ऐसा सवाल पूछा, जो शायद ही किसी पुरुष उम्मीदवार से पूछा जाता। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'अनन्या, आपका काम तो बेहतरीन है, लेकिन पता चला है कि आप फैमिली प्लानिंग के बारे में सोच रही हैं। यह पोस्ट तो बहुत जिम्मेदारी वाला है, ऐसे में क्या आप फैमिली के साथ ऑफिस की नई जिम्मेदारियां संभाल पाएंगी?' यह सवाल सुनकर अनन्या सन्न रह गई। उसकी योग्यता पर उसकी व्यक्तिगत जीवन को भारी माना जा रहा था। कुछ दिनों बाद घोषणा की गई कि राहुल को ऑपरेशंस हेड बना दिया गया। कारण बताया गया कि राहुल ज्यादा फ्लेक्सिबल है और जरूरत के समय उपलब्ध रह सकता है। यह अधिकतर कार्यालयों में व्याप्त उस ग्लास सीलिंग का जीवंत उदाहरण था, जहां महिलाओं को उनकी क्षमता के बजाय उनकी सामाजिक भूमिकाओं के तराजू में तौला जाता है। लेकिन अनन्या ने हार नहीं मानी। उसने एचआर विभाग में निष्पक्ष समीक्षा की मांग की और अपनी परफॉर्मेंस के आंकड़ों के साथ औपचारिक शिकायत दर्ज कराई।



उसने साफ शब्दों में कहा, 'प्रतिबद्धता और काबिलियत का पैमाना जेंडर नहीं, बल्कि रिजल्ट होना चाहिए।' अनन्या के साहस ने दबे स्वर में बात कर रही अन्य महिला सहकर्मियों को भी प्रेरित किया। मामला मुख्यालय तक पहुंचा और जांच में पाया गया कि राहुल का चयन पक्षपातपूर्ण था।

अंततः प्रबंधन को अपनी गलती सुधारनी पड़ी। अनन्या को न केवल वह पद मिला, बल्कि कंपनी ने नई नीतियां लागू कीं ताकि भविष्य में किसी भी महिला की योग्यता को उसके घरेलू भविष्य के अनुमानों से न आंका जाए। अब असमानता की कच्ची दीवार टूट गई थी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी कविताएं

पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर अदिति सक्सेना के भीतर एक कवि मन भी है। इसको प्रमाणित करता है हाल में छपकर आया उनका पहला कविता संग्रह-खो गए हम कहां। इसमें अपने आस-पास की दुनिया के साथ ही देश और पूरी मनुष्यता के प्रति उनकी संवेदनशीलता प्रकट होती है। इस लिहाज से 'बंटवारा' कविता को पढ़ा जा सकता है। कुछ ऐसे ही भाव 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' कविता में भी प्रकट हुए

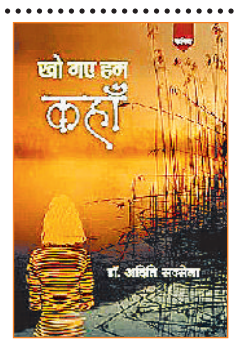

हैं तो कवयित्री को अपने देश के जांबाज सैनिकों पर भी गर्व है। इसे उन्होंने ओजस्वी शब्दों में 'हमारे वीर वायु योद्धा' में व्यक्त किया है। इन सबके साथ पुरुष प्रधान समाज में एक स्त्री को किस तरह हमेशा डरे-सहमे रहने को विवश होना पड़ता है, इस त्रासदी को बहुत मार्मिकता के साथ अदिति ने 'बलात्कार' कविता में शब्दबद्ध किया है। इसी तरह संग्रह की अनेक कविताओं में जीवन और समाज की तमाम विसंगतियों, विडंबनाओं के काव्यात्मक चित्र देखे जा सकते हैं। *

पुस्तक: आ गए हम कहां (कविता संग्रह), **लेखिका:** डॉ. अदिति सक्सेना, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** भावना प्रकाशन, दिल्ली

द्वीपीय जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता

अंडमान-निकोबार का कोकोनट कार्निवल



नारियल की खुशबू, समुद्री लहरों की हरहराती आवाज और स्थानीय संस्कृति के विविध रंग, अंडमान और निकोबार द्वीप का कोकोनट कार्निवल इन सबको एक साथ समेटता है। हर वर्ष आयोजित होने वाला यह उत्सव, नारियल के बहाने इन द्वीपों के खान-पान, परंपरा, कला और संस्कृति से भी रूबरू कराता है।

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

समुद्र के बीच में बसे द्वीपों की अपनी एक अलग भाषा होती है। रास्तों के किनारे झूमते नारियल के पेड़ किसी स्वागत द्वार की तरह लगते हैं और दूर तक फैला नीला पानी यह एहसास करा देता है कि भारत की भौगोलिक कहानी सिर्फ पहाड़ों, मैदानों और रेगिस्तान तक ही सीमित नहीं है। अंडमान-निकोबार पहुंचकर नजर जब नारियल के पेड़ों पर ठहरती है, तो समझ में आता है कि यहां नारियल महज एक फल या पेड़ नहीं बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी, खानपान और स्थानीय अर्थव्यवस्था का हिस्सा भी है। इस रिश्ते को उत्सव में बदल देता है यहां का कोकोनट कार्निवल, जो इस साल 17 से 18 अक्टूबर 2026 को आईटीएफ ग्राउंड, विजय पुरम पोर्ट ब्लेयर में आयोजित होगा।

द्वीपीय जीवनशैली को करीब से देखने का मौका

अंडमान-निकोबार में हर साल अक्टूबर माह में आयोजित होने वाला यह यह पारंपरिक मेला, अपना एक अलग ही चुंबकीय आकर्षण रखता है। इस मौके पर यहां आने वाले पर्यटकों को इन द्वीपों की असली जीवनशैली को करीब से देखने का मौका मिलता है। नारियल से बने खाद्य पदार्थ, स्थानीय उत्पाद, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और स्थानीय स्वाद, सब मिलकर इसे सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं बल्कि अंडमान की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान की झलक बना देते हैं। सैलानियों के लिए किसी जगह की असली खूबसूरती उसके प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों से आगे शुरू होती है। समुद्र तटों की तस्वीरें तो हर पर्यटक खींचता है, लेकिन उन समुद्र तटों के आस-पास रहने वाले लोगों का जीवन कैसा है, वे क्या खाते हैं, क्या बनाते हैं और अपनी प्राकृतिक संपदा को किस तरह देखते हैं? इस सबको जानना यात्रा को एक अनोखा अनुभव बना देता है।

समझ आती है नारियल की बहुपयोगिता



यहां पहुंचकर लोगों को पता चलता है कि नारियल सिर्फ मंदिर में चढ़ाने या कुछ मिठाईयों में इस्तेमाल होने तक सीमित नहीं है। इसकी उपयोगिता की बहुत लंबी-चौड़ी लिस्ट है। इसका पानी हमारी प्यास बुझाता है। इसकी गिरी हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती है। इसका तेल खान-पान से लेकर दूसरे घरेलू कामों में इस्तेमाल होता है, जबकि इसकी जटा और खोल से कई तरह के उपयोगी उत्पाद बनाए जाते हैं। द्वीपों में इसकी मौजूदगी इतनी स्वाभाविक है कि पर्यटकों को शायद पहली नजर में इसकी आर्थिक और सांस्कृतिक भूमिका का अंदाजा भी न हो। कोकोनट कार्निवल इसी रोजमर्रा की चीज को उत्सव के केंद्र में लाकर इसके महत्व को उजागर करता है।

अलग-अलग तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ

इस कार्निवल की एक और खूबी है, यहां पर बनाए जाने वाले विभिन्न व्यंजनों के लजीज स्वाद। अंडमान की यात्रा समुद्री भोजन के स्वाद के बिना अधूरी रहती है। स्थानीय भोजन में कई तरह के समुद्री खाद्य पदार्थों के साथ नारियल की संगति यहां देखते ही बनती है। नारियल आधारित चटनियां, करी और दूसरे स्थानीय व्यंजन यहां आने वाले पर्यटकों को उस स्वाद से परिचय कराते हैं, जो किसी होटल के सामान्य मेन्यू में नहीं मिलता। शाकाहारी यात्रियों के लिए भी यहां नारियल आधारित व्यंजनों की अपनी भरी-पूरी दुनिया है।

संस्कृति के विविध आयामों से परिचय

अंडमान-निकोबार कोकोनट कार्निवल, खान-पान के जरिए भी सैलानियों के सामने स्थानीय संस्कृति परोसता है। यहां की संस्कृति के विविध आयाम हैं, जो सदियों से रह रहे यहां के अनेक समुदायों की परंपराओं से मिलकर बनी है। स्थानीय संगीत और नृत्य, हस्तशिल्प तथा रोजमर्रा के जीवन से जुड़े उत्पाद, इस बात का एहसास कराते हैं कि द्वीपों की संस्कृति मुख्य भूमि से अलग होते हुए भी उसमें भारत की विविधता के चटक रंग घुले हुए हैं।

अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान

इस कोकोनट कार्निवल में आया कोई पर्यटक जब स्थानीय उत्पाद खरीदता है, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेता है या स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियां देखता है, तो इससे यहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था को कई तरह से लाभ पहुंचता है। इस तरह उत्सव पर्यटन को केवल होटल्स और दर्शनीय स्थलों तक सीमित रखने की बजाय उसे स्थानीय समुदायों से जोड़ देता है।

हर अनुभव होता है यादगार

सुबह समुद्र के किनारे सूर्योदय, दिन में द्वीपों की सैर और स्थानीय बाजारों की खोज तथा शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव। कोकोनट कार्निवल के समय यहां आने वाले पर्यटक अपनी आंखों में सिर्फ अंडमान-निकोबार द्वीप की खूबसूरती ही नहीं ले जाते बल्कि इस सांस्कृतिक अनुभव को भी ले जाते हैं, जो जीवन भर उनके मन में यहां की याद ताजा बनाए रखता है। कोकोनट कार्निवल की सबसे खूबसूरत बात यही है कि यह किसी पर्यटन अनुभव की नकल करने की बजाय स्थानीय जीवन के साधारण चीज को उत्सव में बदल देता है। एक नारियल के बहाने, प्रकृति, भोजन, रोजगार, हस्तशिल्प, लोकसंस्कृति और पर्यटन, सब एक ही फ्रेम में दिखाई देने लगते हैं। *

रखें इन बातों का ध्यान

किसी भी द्वीपीय पर्यटन की तरह यहां भी जिम्मेदाराना पर्यटन बहुत जरूरी है। अंडमान-निकोबार के समुद्र तट इसलिए भी लोगों को आकर्षित करते हैं, क्योंकि ये साफ-सुथरे हैं। ऐसे में यह पर्यटकों की जिम्मेदारी भी बनती है कि ये साफ-सुथरे समुद्र तट, बाकी सैलानियों के लिए भी ऐसे ही बने रहें, इसलिए प्लास्टिक कचरा न फैलाना, समुद्री और तटीय पारिस्थितिकी का सम्मान करना, स्थानीय समुदायों और उनकी परंपराओं की तस्वीर या वीडियो लेने से पहले अनुमति लेना, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना जैसी बातों का पालन करें। भले ये छोटी बातें लगती हों, लेकिन संवेदनशील द्वीपों के लिए इनका बड़ा महत्व है।

सफल और समृद्ध जीवन की कामना हम सभी करते हैं। इसे हासिल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए आपके व्यक्तित्व और व्यवहार में कुछ विशेष गुणों का होना जरूरी है। इस बारे में जानिए।

आपको सफल-समृद्ध बनाएंगी

व्यक्तित्व की खूबियां-आदतें

सक्सेस मंत्र
नेहा जैन



किसी ने क्या खूब कहा है, दौलत तिजोरी या बैंक खाते में आने से पहले सोच में जन्म लेती है। यानी सफल और समृद्ध होने के लिए हमारी सोच और व्यक्तित्व में कुछ आदतों का शामिल होना जरूरी है।

खुद पर भरोसा: हर बड़ी उपलब्धि की शुरुआत तालियों से नहीं होती। कई बार शुरुआत संदेह और उपहास से होती है। असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वाले लोगों में अपने विचार और अपनी क्षमता पर एक मजबूत विश्वास दिखाई देता है। इसका मतलब यह नहीं कि वे हर समय सही होते हैं। बल्कि वे गलत होने की संभावना के बावजूद कोशिश करने का साहस रखते हैं। आत्मविश्वास का सही अर्थ है- 'मुझे सब कुछ नहीं आता, लेकिन मैं सीख सकता हूं।' यही सोच नया व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करती है।

भविष्य का सही अनुमान लगाने की आदत: आम लोग व्यवसाय के लिए देखते या विचार करते हैं कि आज बाजार में क्या चल रहा है? लेकिन असाधारण सोच वाला व्यक्ति सोचता है कि कुछ वर्षों बाद लोग क्या चाहेंगे? बाजार में किस उत्पाद या सेवा की मांग होगी। यही फर्क कई बार विचार और नवाचार के बीच होता है। तकनीक बदल रही हैं, लोगों की आदतें बदल रही हैं, काम करने के तरीके बदल रहे हैं- इन बदलावों को समझकर आगे की तैयारी करना दूरदृष्टि है।



आलोचना से बेपरवाह: जैसे ही आप कुछ नया करेंगे, राय देने वाले लोग मिल जाएंगे। कोई कहेगा, 'यह तुम्हारे बस का नहीं।' कोई कहेगा, 'इसमें पैसा नहीं है।' कोई आपके पुराने अनुभवों का हवाला देकर आपको रोकने की कोशिश करेगा। आलोचना से भागना नहीं चाहिए। लेकिन हर राय को दिल और दिमाग पर नहीं लेना चाहिए। इस विषय में सुलझा हुआ तरीका है सलाह सुनो, उसके तथ्य जांचो, उपयोगी बात अपनाओ और अंतिम निर्णय सोच-समझकर खुद लो।

बेहतर बनने की भूख: असाधारण लोग केवल सफलता पाने की इच्छा नहीं रखते। वे अपने काम में उत्कृष्टता की तलाश करते रहते हैं। यह मानसिकता दूसरों को हराने की तुलना में कहीं अधिक उपयोगी है। यह सूत्र लंबे समय में असाधारण परिणाम दे सकता है।

वर्तमान सुख के बदले बड़ा लक्ष्य: मान लीजिए आपके सामने दो विकल्प हैं अभी दो घंटे मोबाइल पर मनोरंजन या वही दो घंटे किसी जरूरी कौशल को सीखने में लगाना। तुरंत मिलने वाला सुख आकर्षक होगा। लेकिन भविष्य का लाभ अकसर कम दिखाई देता है। इसीलिए आत्म-अनुशासन इतना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब जीवन से आनंद खत्म करना नहीं है। इसका अर्थ है यह समझना कि हर इच्छा को तुरंत पूरा करना जरूरी नहीं।

पैसे की बचत जरूरी: सफल-समृद्ध लोग जानते हैं कि धन का अर्थ केवल अधिक कमाना नहीं है। धन को संभालना, बचाना और समझदारी से उपयोग करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति आय बढ़ा सकता है, लेकिन यदि उसका पूरा पैसा अनियोजित खर्च हो जाए तो आर्थिक सुरक्षा नहीं बनती। यानी पैसे को केवल उपभोग में खत्म करने के बजाय उसे भविष्य के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

जिम्मेदारी स्वीकार करना: जीवन में बहुत कुछ हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। बाजार, मौसम, दूसरे लोगों के फैसले और कई परिस्थितियां हमारे हाथ में नहीं होतीं। साथ ही आपको समझना चाहिए कि हर परिस्थिति में कुछ न कुछ ऐसा जरूर होता है, जिस पर हमारा नियंत्रण रहता है जैसे-हमारी तैयारी, हमारा व्यवहार, हमारा अगला कदम। यही जिम्मेदारी की भावना व्यक्ति को निष्क्रिय शिकायत से सक्रिय प्रयास की ओर ले जाती है।

सीमित जोखिम लेना: सफलता की कहानियां अकसर जोखिम से जुड़ी होती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि सफल व्यक्ति आंख बंद करके जोखिम लेते हैं। समझदारी यह है कि जोखिम और संभावित लाभ दोनों को देखा जाए। किसी नई स्किल को सीखने में समय लग सकता है, लेकिन वह वर्षों तक उपयोगी हो सकती है। कोई नया व्यवसाय शुरू करने से पहले बाजार, पूंजी, मांग और संभावित नुकसान समझना जरूरी है। *

हालांकि पान मूल रूप से भारतीय पौधा नहीं है। लेकिन इसकी पहचान प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है। पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक संदर्भों, पूजा-पाठ से लेकर औषधि और सामाजिक प्रतिष्ठा के तौर पर इसका उपयोग किया जाता रहा है।

प्राचीन काल से बरकरार है

भारतीय संस्कृति में पान की शान

संस्कृति
शाहिद ए. चौधरी





पान के पत्ते को लेकर रामकथा में सुंदर प्रसंग का वर्णन मिलता है। भगवान श्रीराम का संदेश लेकर जब हनुमानजी लंका की अशोक वाटिका में पहुंचे तो संदेश पाकर माता सीता अत्यधिक प्रसन्न हो गईं और वह इसके लिए हनुमानजी को कोई उपहार देना चाहती थीं, लेकिन उन्हें आस-पास कोई फूल नहीं मिला। तब उन्होंने पास के एक पौधे से ताजा पत्ते तोड़े और उनको आपस में गूंथकर, आशीर्वाद के साथ हनुमानजी को प्रदान किया। वह पौधा पान का था। चूंकि यह प्रेमाशीष माता सीता से उन्हें मिला था, इसलिए हनुमानजी के लिए पान के पत्ते अति प्रिय हो गए, विशेषकर इसलिए कि यह सम्मान, शुद्धता व नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं। मान्यता है कि तभी से पूजा के दौरान जब हनुमानजी को पान के पत्ते या उनकी माला को अर्पित किया जाता है, तो वे अति प्रसन्न हो जाते हैं क्योंकि इससे उन्हें माता सीता के आशीष की याद आ जाती है। इससे हनुमानजी भक्त को सुख, अच्छी सेहत के आशीर्वाद के अतिरिक्त उसके समक्ष आने वाली बाधाएं भी दूर कर देते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में वर्णन: पान, जिसे तंबुला भी कहते हैं, का उल्लेख प्राचीन संस्कृत, तमिल साहित्य और पांचवीं शताब्दी के कालिदास के लेखन में भी मिलता है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता में पान की तारीफ करते हुए बताया गया है कि यह पाचन में मदद करता है, श्वास में ताजगी लाता है और शरीर के दोषों को संतुलित करता है। कामसूत्र में कहा गया है कि पान चबाने से पौरुष में वृद्धि होती है। इस पृष्ठभूमि में पान का भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा बनना स्वाभाविक था और वह भी इस सीमा तक कि प्राचीन व मध्ययुग की हिंदू रियासतों (जैसे कन्नौज) में राजा के हाथों से पान हासिल करना बहुत बड़ा शाही सम्मान माना जाता था। स्वागत व विदाई में पान के पत्तों की संख्या से हैसियत मालूम होती थी- राजा को 32 पान, राजकुमार को 24 पान, ज्ञानी को 12 पान और साधारण व्यक्ति को 4 पान प्रदान किए जाते थे। औपचारिक समारोह में मेजबान दोनों हाथों से पान पेश करता था। दूसरों के सामने पान खाना और उन्हें पेश न करना अभद्रता में शुमार होता था। प्रतिद्वंदी से पान लेने के लिए मजबूर होना अपमान का घूंट पीना था। महिला द्वारा पुरुष को पान देना उसे आमंत्रित करना था।

इतिहास में मिलते हैं संदर्भ: दिलचस्प बात यह है कि पान, भारतीय पौधा नहीं है। यह इंडोनेशिया के द्वीपों व मलय प्रायद्वीप से पानी के व्यापारी जहाजों के जरिए भारत आया। कर्नाटक के बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर (जिसका निर्माण 12वीं शताब्दी में होयसल राजवंश ने कराया था) की बाहरी दीवारों पर एक महिला को पान के पत्ते लिए हुए दर्शाया गया है, जिससे मालूम होता है कि पान को भारत में सदियों पहले स्वीकृति मिली और अब कोई हिंदू समारोह इसके बिना पूर्ण नहीं होता है।

तमिल संगम कविता 2,000 वर्ष पुराने संसार को बयान करती है जो पान से परिचित थी। पातिप्पलाई कविता में पुहार के व्यस्त बाजारों का वर्णन है, जहां पान के पत्ते बेचे जाते थे। मदुरैकांची कविता में पान की खेती व बिक्री का जिक्र मिलता है, जबकि कुसुंटोकाई कविता में बताया गया है कि छाली के साथ पान पेश करना मेजबानी व प्रेम का प्रतीक माना जाता था। असम में मेहमान को सबसे पहले छालियां या सुपारी पेश की जाती थीं। भूटान में जब भी दो लोग मिलते तो 'डोमा ज्हेस' (कृपया पान व छाली लें) कहते।

मुगलकाल में पान का सेवन ललित कला के स्तर तक पहुंच गया। चांदी व सोने के पानदान कुलीन जीवन का आवश्यक अंग बन गए। यूरोपीय यात्रियों जैसे थॉमस रो ने लिखा है कि बादशाह जहांगीर के अपने पानदान से पान मिलना जबरदस्त राजनयिक सम्मान का प्रतीक था। दिल्ली व लखनऊ के नवाबी दौर में पान शेर-ओ-शायरी, संगीत व तवाइफों की तहजीब का हिस्सा बन गए। ब्रिटिशकाल में पान का कुलीन सांस्कृतिक स्टेटस कम होने लगा। ब्रिटिश प्रशासनिक व सेनेटरी दृष्टिकोण के तहत पान को 'गंदी देशज प्रथा' के रूप में देखा जाने लगा। छाली व तंबाकू युक्त पान खाने की आदत को मुंह व गले के कैंसर से जोड़ा जाने लगा। लेकिन इस 'कोलोनियल कलंक' के बावजूद पान खाने का सिलसिला जारी रहा।

बरकरार है रुतबा: आज भी रोजमर्रा के स्ट्रीट फूड के रूप में (देश के लगभग हर शहर में आपको पनवाड़ी की दुकान मिल जाएगी), खाने के बाद हाजमे के लिए और मेहमाननवाजी के तौर पर शादियों, उत्सवों व समारोह में। पहले जहां सिर्फ तीन किस्म के पान खाए जाते थे- मीठा पान (गुलकंद, तिल, नारियल आदि युक्त), सादा पान (सिर्फ कत्था, चुना व छाली सहित) व जर्दा पान (तंबाकू सहित) तो अब चॉकलेट, फ्रूट-फ्लेवर, फायर पान आदि भी आ गए हैं। *

शायरों की नजर में पान का अंदाज



'जब हम-कलाम हम से होता है पान खाकर/किस रंग से करे है बातें चबा-चबाकर।' मीर तकी मीर ने अपने इस शेर में फ्लर्ट करने के रोजमर्रा के पलों का शानदार नक्शा खींचा है, जिसमें प्रेमिका का पान खाना लालित्य व शरारत का माध्यम बन जाता है। पान चबाने से बोलना जानबूझकर धीमा, रंगीन, प्यारा व आकर्षण भरा हो जाता है। प्रेमी न सिर्फ शब्दों से मंत्रमुग्ध हो जाता है बल्कि इस वजह से भी कि हर 'चबाया' हुआ वर्ण शोखी में बदल जाता है। प्रेमिका के इस अंदाज से पान खाने पर मुसहफी गुलाम हमदानी कहते हैं- 'पान खाने की अदा ये है तो इक आलम को/खून रुलाएगी मिरी जान दहन-ए-सुर्ख तिरा।' लेकिन जब प्रेमिका अपने प्रेमी को पान देती है, तो असद अली खान कलक के शब्दों में यह होता है- 'होठों में दाब कर जो गिलौरी दी यार ने/क्या दांत पीसे गैरों ने क्या-क्या चबाए होंठ।' इसी विचार को अकबर इलाहाबादी ने इस तरह से कहा है- 'लगावट की अदा से उनका कहना पान हाजिर है/कयामत है सितम है दिल फिदा है जान हाजिर है।'

शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों में भक्ति गीत और भजनों का क्रेज रहा है। इनमें भी मां दुर्गा को समर्पित कई गीत तो बेहद लोकप्रिय हुए और आज भी उनकी लोकप्रियता बरकरार है। यहां कुछ ऐसे ही लोकप्रिय फिल्मी गीतों पर नजर डाल रहे हैं, जिनमें मां दुर्गा की महिमा का वर्णन या उनकी शक्ति का आह्वान किया गया है।

मां दुर्गा की महिमा से दमकते

हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीत

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश



फिल्म 'अवतार' का गीत 'चलो बुलावा आया है..'



फिल्म 'सुहाग' का गीत 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा'

धर्म का प्रतिनिधित्व करती हुई जब कोई फिल्म बनती है, तो उसे देखने के नए रिकॉर्ड बनते हैं और जब किसी फिल्म में चमत्कार होता है, तो वह उस फिल्म का हिट पक्ष बन जाता है। यूं तो लगभग हर देवी-देवता की बॉलीवुड फिल्मों में गीतों में स्तुति हुई है लेकिन उनमें से कुछ देवी-देवताओं पर अधिक गीत बनाए गए हैं। मां दुर्गा और उनके विभिन्न स्वरूपों का गुणगान, बॉलीवुड फिल्मों के गीतों में खूब किया जाता रहा है। कुछ फिल्में तो ऐसी हैं, जिनमें शामिल किए गए मां दुर्गा के एक गीत या भजन ने उस फिल्म को भरपूर लोकप्रियता प्रदान की। 'अवतार', 'आशा' और 'सुहाग' जैसी कई फिल्में इसका बेहतरीन उदाहरण हैं।

'अवतार' का 'चलो बुलावा आया है': फिल्म 'अवतार' वर्ष 1983 में जब आई तो इसकी कहानी ने दर्शकों के दिलों को स्पर्श कर लिया। राजेश खन्ना और शबाना आजमी ने इस फिल्म में ऐसे माता-पिता का रोल प्ले किया है, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। इसी में जब बच्चा अधिक बीमार होता है, तो दोनों माता वैष्णो देवी के दरबार में जाते हैं और वहां जो चमत्कार होता है, वही इस फिल्म का अहम हिस्सा बन जाता है। फिल्म में नरेंद्र चंचल, महेंद्र कपूर और आशा भोसले द्वारा गाया यह गीत 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है', आज भी घरों-मंदिरों में भक्ति-भाव से खूब गाया, सुना और बजाया जाता है। यह मां दुर्गा को समर्पित सबसे लोकप्रिय भक्ति गीतों में से एक है। शारदीय नवरात्र हो या चैत्र नवरात्र माताराणी का यह फिल्मी भजन अवसर को और भी भक्तिमय बना देता है। मां और दुर्गा मां को केंद्र में रखकर बुना गया यह गीत आज भी उतना ही लोकप्रिय है, जितना अपने रिलीज के वक्त हुआ था।



फिल्म 'क्रांतिवीर' का गीत 'जय अंबे जगदंबे मां..'

'आशा' का 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए': सन 1980 में आई फिल्म 'आशा', जितेंद्र, रीना राय और रामेश्वरी के अभिनय से सजी थी। इसमें भी नरेंद्र चंचल और मोहम्मद रफी द्वारा गाया भजन 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए,' खूब लोकप्रिय हुआ। आज चाहे माता वैष्णों के द्वार पर जाने वाले भक्त हों या फिर दूसरे सिद्धपीठों में मां के दर्शन को जाते भक्त, मार्ग से लेकर मंदिर तक, हर कहीं 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए, मैं आया मैं आया शेरा वालिए..' सुनाई पड़ता है। माता रानी के भक्त इसे भक्ति भावना के प्रदर्शन के साथ-साथ अपनी धार्मिक यात्रा की थकान मिटाने के लिए भी गाते हैं।

'सुहाग' का 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम': 1979 की फिल्म 'सुहाग' जब आई तो एंग्री यंग मैन का जमाना था। अमिताभ बच्चन, शशि कपूर तथा रेखा की इस फिल्म का गीत- 'हे नाम रे, सबसे बड़ा तेरा नाम, ओ शेरोंवाली, ऊंचे डेरों वाली, बिगड़े बना दे मेरे काम।' मोहम्मद रफी तथा आशा भोसले ने इसमें जो लय दी है, वह ही इसको ऑल टाइम हिट बना गई। मंदिरों से लेकर दुर्गा पंडालों तक में इसकी मधुर आवाज से भक्त रमे रहते हैं। सही बात तो यह है कि चाहे डांडिया हो या गरबा सभी में इसको खूब बजाया जाता है।



'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत 'मां शेरा वालिए'

नवरात्र पर केंद्रित कई अन्य गीत हुए लोकप्रिय: अलग-अलग दौर में आई कई अन्य फिल्मों में भी मां दुर्गा पर केंद्रित गीत रचे गए। इन गीतों ने भी खूब लोकप्रियता बटोरी। आज भी लोगों के दिलों में इन गीतों की खास जगह है। 'हम दिल दे चुके सनम' का 'ढोली तारो ढोल बाजे, ढोल बाजे ढोल बाजे, की धाम धाम बाजे ढोल...' भी डांडिया पंडालों में उतना ही लोकप्रिय है, जितना कि इस फिल्म में था। फिल्म 'क्रांति' का 'दुर्गा है मेरी मां, अंबे है मेरी मां' और 'क्रांतिवीर' का 'जय अंबे जगदंबे मां' भी कम प्रसिद्ध नहीं हुए। 'मर्द' में अनु मलिक तथा शब्बीर कुमार का गाया हुआ गीत 'मां शेरोंवाली' उस समय खूब चला, जब यह मूवी आई थी। 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत इसी से मिलता हुआ था 'मां शेरा वालिए, तेरा शेर आ गया।' फिल्मों से अलग हटकर देखें तो माता के जगराते में भी यही शक्ति केंद्र में रही। आज तक गैर फिल्मी जो सबसे अधिक पसंदीदा गीत बना वह है 'प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी।' इसे तो लोकगायकों ने भी गाया और फिल्मी गायक-गायिकाओं ने भी। 'अंबे तू है जगदंबे' को तो न जाने कितने गायकों ने गाया है और बॉलीवुड ने इसे कई बार दृश्य को एक नया मोड़ देने के लिए प्रयोग किया।

दर्शकों को खूब लुभाया इन गीतों ने: इस बात में संदेह नहीं कि माता दुर्गा के तमाम रूप हैं जिन्हें बॉलीवुड ने जब तब दर्शकों के सामने अलग-अलग गीतों के रूप में पेश किया। इसके लिए फिल्म की कहानी ऐसी रखी गई जिसमें एक भजननुमा गीत इसमें समाहित किया जा सके। कहानी भी ऐसी जिसे देखकर दर्शकों की आंखें नम हो जाएं। कुछ भजनों को इस तरह से तैयार किया गया कि वह डांडिया या गरबा में भी चलें और दुर्गा जागरण या सामान्य तौर पर भक्तों को भक्ति में रमा दें। कहने का सार यही है कि बॉलीवुड फिल्मों में मां शक्ति के विभिन्न रूपों को समर्पित खूब गीत रचे गए और ऐसे गीत खूब लोकप्रिय भी हुए। *